तापमान
अधिकतम 28 .6 डिग्री
न्यूनतम 7 .6 डिग्री

हरिभूमि
रोहतक भूमि
रोहतक, रविवार, 9 नवंबर 2025

11 विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा की उड़ान

12 अंडर-11 राज्यस्तरीय खेलों में खिलाड़ियों ...

खबर संक्षेप

सांपला: प्लाइवुड फैक्ट्री में लगी आग

सांपला। कस्बे में टोल के नजदीक शनिवार की शाम को गणपति प्लाइवुड फैक्ट्री में भीषण आग लग गई। जिसमें लाखों रुपए का सामान जल कर राख हो गया।

आग इतनी भयावह थी कि कोई भी इसके पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा सका। जिससे आग पर काबू पाने में मुश्किल हुई। आग का धुआं दूर तक दिखाई दे रहा था। आग की सूचना मिलने पर फायर ब्रिगेड की गाड़ियां और पुलिस भी मौके पर पहुंची। फायर ब्रिगेड की गाड़ियों ने आग पर काबू पाने की कोशिश की। सभी कर्मचारी सुरक्षित बाहर निकल गए, जिससे बड़ी जनहानि टल गई। आग पर देर रात काबू पा लिया गया।

पं. श्री राम रंगशाला में 9 से 11 तक रागनी उत्सव

रोहतक। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र प्रयागराज एवं नगर निगम के संयुक्त तत्वाधान में 9 से 11 नवंबर तक स्थानीय पंडित श्रीराम रंगशाला रोहतक में रागिनी उत्सव का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम कोऑर्डिनेटर शिशपाल चौहान ने बताया कि कार्यक्रम का समय 7 बजे रखा गया है। कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा, पूर्व सहकारिता मंत्री मनीष कुमार ग्रोवर, नगर निगम के मेयर रामअवतार वाल्मीकि, जिला अध्यक्ष एडवोकेट रणवीर ढाका और प्रदेश मीडिया सह प्रभारी शमशेर सिंह खरक भी शिरकत करेंगे।

कन्या कॉलज में मनाई जाएगी रजत वर्षगांठ

सांपला। सर छोटूराम कन्या महाविद्यालय में 15 नंबर को कॉलेज की रजत वर्ष गांठ मनाई जाएगी। प्राचार्य डॉक्टर संतोष हुड्डा ने बताया कि 10 नवंबर को वार्षिक एथलेटिक मीट का आयोजन होगा। 11 नवंबर को मोटिवेशनल टांक एवं विज्ञान प्रदर्शनी 12 और 13 नंबर को वर्कशॉप एवं आर्टिस्टिक स्किल, रक्तदान शिवर लगाया जाएगा।

दुकान में हुई चोरी के दो आरोपी गिरफ्तार

रोहतक। पुलिस को शहर में हुई बड़ी चोरी की वारदात का पर्दाफाश करने में सफलता मिली है। पुलिस टीम ने दुकान में चोरी की घटना को अंजाम देने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। दोनों से पूछताछ जारी है और चोरी किया गया माल बरामद करने के प्रयास किए जा रहे हैं। थाना शहर प्रभारी निरीक्षक रमेश कुमार ने बताया कि गांधी कैम्प निवासी रोहित ने शिकायत दी थी कि उसने माल गोदाम रोड के पास दुकान कर रखी है। 24 अक्टूबर की सुबह जब उसने दुकान खोली तो अंदर का सामान बिखरा पड़ा था और गल्ला टूटा हुआ मिला। दुकान से करीब 7 लाख रुपये नकद, एक सोने का कड़ा, लैपटॉप और अन्य कीमती सामान चोरी हो गया था।

चमकेगा शहर : निगम आयुक्त डॉ. आनंद कुमार शर्मा ने सरकार को भेजा प्रस्ताव

शहर की सफाई व्यवस्था सुधारने की कवायद, 300 कर्मचारी और मांगे

हाल ही में खरीदी गईं 200 नई कूड़ा गाड़ियां

मौजूदा सफाई स्टाफ के मुकाबले शहर का क्षेत्रफल काफी बढ़ चुका है, जिससे हर वार्ड में नियमित सफाई बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो गया है। नई नियुक्तियों के बाद सफाई व्यवस्था में बड़ा सुधार देखने को मिलेगा।

22 वार्डों में केवल 600 कर्मचारियों से चलाया जा रहा सफाई कार्य

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

नगर निगम क्षेत्र में सफाई व्यवस्था को और बेहतर बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया जा रहा है। नगर निगम आयुक्त डॉ. आनंद कुमार शर्मा ने शहर की बढ़ती आबादी और विस्तार को देखते हुए सरकार को 300 अतिरिक्त सफाई कर्मचारियों की नियुक्ति के लिए प्रस्ताव भेजा है। आयुक्त ने कहा कि मौजूदा सफाई स्टाफ के मुकाबले शहर का क्षेत्रफल काफी बढ़ चुका है, जिससे हर वार्ड में नियमित सफाई बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो गया है। नई नियुक्तियों के बाद सफाई व्यवस्था में बड़ा सुधार देखने को मिलेगा।

बनेगा नया मॉनिटरिंग सिस्टम

निगम अब सफाई व्यवस्था की नियमित निगरानी के लिए डिजिटल मॉनिटरिंग सिस्टम भी लागू करने जा रहा है। इसमें प्रत्येक सफाई कर्मचारी का क्षेत्र, कार्य समय और उपस्थिति मोबाइल एप के माध्यम से दर्ज की जाएगी। इस प्रणाली से लापरवाही पर तुरंत कार्रवाई की जा सकेगी।

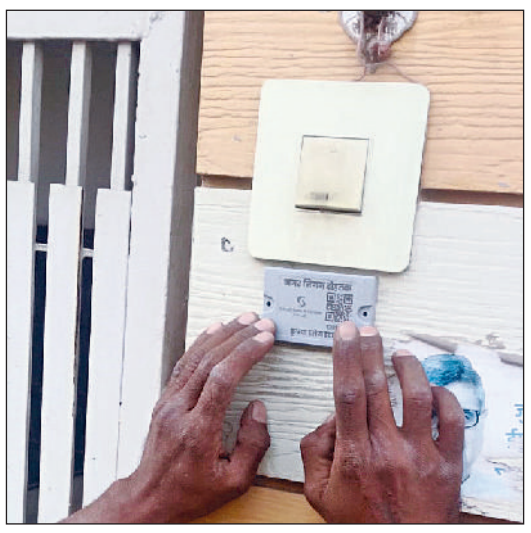

शहर के विस्तार से बढ़ा बोझ

शहर में पिछले कुछ वर्षों में तेजी से विस्तार हुआ है। नई कॉलोनियां और आवासीय क्षेत्र निगम सीमा में जुड़ने से सफाई कर्मचारियों पर कार्यभार कई गुना बढ़ गया है। फिलहाल नगर निगम के पास सफाई के लिए करीब 600 कर्मचारी कार्यरत हैं, जबकि आवश्यक संख्या लगभग 2000 से अधिक बताई जा रही है। 600 में भी करीब 150 कर्मचारी ही स्थाई नियुक्ति पर हैं। आयुक्त डॉ. शर्मा ने बताया कि "वर्तमान स्टाफ से हम सफाई व्यवस्था को बनाए रखने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, लेकिन शहर के बढ़ते क्षेत्र और जनसंख्या को देखते हुए अतिरिक्त कर्मचारियों की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इसी कारण हमने सरकार को 300 नए पदों की स्वीकृति के लिए प्रस्ताव भेजा है।

हर वार्ड में लग रहे हैं टैग

नगर निगम के सफाई विभाग की टीमें इस अभियान के तहत प्रत्येक वार्ड में घर-घर जाकर टैग लगा रही हैं। निगम आयुक्त ने सफाई शाखा के अधिकारियों और कर्मचारियों को निर्देश दिए हैं कि वे यह सुनिश्चित करें कि उनके संबंधित वार्ड क्षेत्र में हर घर, दुकान और संस्थान पर टैग लगाया जाए। इस दौरान निगम ने एजेंसी को भी आदेश दिए हैं कि वे सभी टैग की स्कैनिंग का नियमित रिकॉर्ड बनाए रखें।

नई गाड़ियों से मिलेगी अतिरिक्त मदद

सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए नगर निगम ने हाल ही में 200 नई सफाई गाड़ियां खरीदी हैं। इन वाहनों में आधुनिक उपकरण लगे हैं, जिससे कचरा उठाने और निस्तारण की प्रक्रिया तेज और सुविधाजनक होगी। निगम के अनुसार, इन वाहनों का उपयोग मुख्य सड़कों, बाजारों और आवासीय इलाकों में नियमित रूप से किया जाएगा। नई गाड़ियों से निगम की क्षमता लगभग दोगुनी हो जाएगी। इससे न केवल सफाई की गति बढ़ेगी बल्कि कचरा समय पर डंपिंग साइट तक पहुंच सकेगा।

कचरा निस्तारण और डंपिंग साइट के लिए भी नई योजना

नगर निगम ने कचरे के वैज्ञानिक निस्तारण के लिए नई योजना तैयार की है। इसके तहत शहर में वेस्ट सेग्रीगेशन प्वाइंट बनाए जाएंगे, जहां गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग एकत्र किया जाएगा। निगम ने पहले ही कचरा उठाने वाली गाड़ियों में दो अलग-अलग डिब्बे लगाने का निर्णय लिया है। डॉ. शर्मा ने बताया कि शहर के बाहरी क्षेत्र में डंपिंग साइट को भी अपग्रेड किया जा रहा है। वहां नई मशीनें और कंप्रेसर लगाए जा रहे हैं।

कैसे काम करेगी टैगिंग प्रणाली

नगर निगम की एजेंसी द्वारा लगाए जा रहे टैग प्रत्येक घर या दुकान के लिए एक यूनिक पहचान का काम करेंगे। जब निगम की कूड़ा उठाने वाली गाड़ी किसी घर या प्रतिष्ठान से कचरा एकत्र करेगी, तो वहां लगे टैग को स्कैन किया जाएगा। स्कैनिंग के बाद यह जानकारी सीधे पोर्टल पर स्वतः दर्ज हो जाएगी। इस तरह यह तुरंत पता चल जाएगा कि किस घर से कूड़ा उठाया गया और किससे नहीं। इस प्रक्रिया से किसी भी तरह की लापरवाही या अनियमितता की संभावना खत्म हो जाएगी।

वेल्कम: 20 मिनट में पहुंच गई सांघी

हेलीकॉप्टर से ससुराल आई एयर होस्टेस दुल्हन

सीसर खास से उड़ान भरकर सांघी पहुंचा हेलिकॉप्टर, देखने उमड़ी भीड़, दूल्हा बोला-परिवार की खुशी के लिए किया खास इंतजाम

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

जिले में एक अनोखी शादी चर्चा का विषय बनी रही, जब एयर होस्टेस दुल्हन की विदाई हेलिकॉप्टर से की गई। दूल्हा नवीन अपनी दुल्हन हैप्पी को लेकर हेलिकॉप्टर से गांव सांघी पहुंचा। यह हेलिकॉप्टर गुरुग्राम से 5 लाख रुपये में किराये पर लिया गया था। जैसे ही आसमान में हेलीकॉप्टर दिखा, गांव वालों की भीड़ मंडी मैदान में जमा हो गई। पुलिस को भीड़ नियंत्रित करने के लिए मौके पर तैनात रहना पड़ा। जानकारी के अनुसार, शनिवार शाम को हेलिकॉप्टर ने दुल्हन के गांव सीसर खास से उड़ान भरी और लगभग 20 मिनट बाद सांघी गांव के अनाज मंडी मैदान में उतरा। इस दौरान दूल्हा-दुल्हन के साथ परिवार के छह सदस्य भी हेलिकॉप्टर में सवार थे। लैंडिंग के वक्त सुरक्षा को देखते हुए पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मौके पर मौजूद रहे। गांव पहुंचते ही दूल्हा-दुल्हन को देखने के लिए भारी भीड़ उमड़ पड़ी। ग्रामीणों ने कहा कि उन्होंने पहली बार किसी शादी में हेलिकॉप्टर से दुल्हन को आते देखा है।

एयर होस्टेस है दुल्हन, शराब के कारोबार में है दूल्हा

दूल्हा नवीन गांव सांघी का रहने वाला है और शराब ठेकों में हिस्सेदारी के साथ-साथ फाइनेंस का काम भी करता है। उसके पिता अजीत सिंह गांव में खेती-बाड़ी करते हैं। दुल्हन हैप्पी पेशे से एयर होस्टेस हैं और ग्रेजुएट हैं। दोनों की शादी शनिवार को सीसर खास गांव में संपन्न हुई। नवीन ने बताया कि उसने यह हेलिकॉप्टर परिवार की खुशी और यादगार पल बनाने के लिए बुक किया।

गांव में चर्चा का विषय बनी शादी

जैसे ही हेलिकॉप्टर लैंड हुआ, गांव में लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी इस नजारे को देखने के लिए उत्साहित थे। ग्रामीणों ने कहा कि यह पहली बार है जब किसी शादी में हेलिकॉप्टर से विदाई हुई है। शाम होते-होते दूल्हा-दुल्हन घर पहुंचे, जहां परिवार और रिश्तेदारों ने फूल बरसाकर उनका स्वागत किया। गांव में यह शादी लंबे समय तक चर्चा में रहने वाली बताई जा रही है।

गांव बलियाना में पिता-पुत्र की हत्या में बड़ा खुलासा

रसोई में खाना लेने गया था धर्मबीर, गोली मारने के बाद बोले-बेटे को भी मार दिया

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

गांव बलियाना में शुक्रवार शाम को हुए दोहरे हत्याकांड ने पूरे इलाके को दहला दिया। एक ही परिवार के पिता धर्मबीर और पुत्र दीपक की गोली मारकर की गई हत्या से गांव में मातम पसरा हुआ है। पुलिस ने वारदात के कुछ ही घंटों बाद सोनीपत में मुठभेड़ के बाद दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था। मुठभेड़ में दोनों को गोली लगी, जिन्हें इलाज के बाद पुलिस अब हिरासत में लेकर पूछताछ करने की तैयारी में है। प्रारंभिक जांच में हत्या के पीछे पुरानी रंजिश का मामला सामने आया है। वहीं, पुलिस ने शनिवार को पिता पुत्र के शवों का पोस्मार्टम करवा परिजनों को सौंप दिया है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

बरसाई गोलियां

जानकारी के अनुसार, शुक्रवार शाम धर्मबीर घर में मौजूद था और रसोई में खाना लेने गया था। इसी दौरान अचानक दो बदमाश घर में घुस आए और उस पर ताबड़तोड़ गोलियां चला दीं। गोली लगते ही धर्मबीर जमीन पर गिर पड़ा। शोर सुनकर बाहर आए लोगों ने देखा तो धर्मबीर खून से लथपथ पड़ा था। इस बीच हमलावर बाहर आते हुए जोर से बोले-बेटे को भी मार दिया है। ग्रामीणों के अनुसार, कुछ देर बाद घर के बाहर ही बेटे दीपक का शव भी मिला। दीपक पर भी गोलियां चलाई गईं और हमलावर मौके से फरार हो गए। घटना के बाद पूरे गांव में दहशत फैल गई।

मुखाग्नि देते हुए परिजन

जल्द सुलझ जाएगा पूरा मामला: एसपी

एसपी सुरेंद्र भारिया ने बताया कि पुलिस के लिए यह केस प्राथमिकता में है। दो आरोपियों को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया गया है और शेष आरोपियों की तलाश जारी है। उन्होंने कहा कि वारदात पुरानी रंजिश से जुड़ी लग रही है, लेकिन हर पहलू से जांच की जा रही है। आरोपियों के मोबाइल, कॉल डिटेल और हथियारों की जांच कराई जा रही है।

न्याय की मांग पर अड़े परिजन

उधर, परिजनों और ग्रामीणों ने पुलिस से मांग की है कि हत्यारों को जल्द से जल्द सख्त सजा दी जाए ताकि गांव में फिर कोई ऐसी वारदात न हो। ग्रामीणों ने प्रशासन से मृतकों के परिवार को आर्थिक सहायता देने की मांग भी रखी है।

पलकों पर बैठाएंगे रोहद टोल सांपला से लेकर शहर में कई जगह होगा सम्मान

चैंपियन शेफाली वर्मा आज पहुंचेगी रोहतक बेटी के भव्य स्वागत को तैयार ढोल-नगाड़े

एडीसी रोहतक नरेंद्र कुमार और भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सतीश नांदल सापला में करेंगे स्वागत

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

दिल्ली बाईपास सर्किट हाउस से खुली जीप में ले जाया जाएगा शेफाली वर्मा को, साथ में रहेंगे हरियाणा के मंत्री कृष्ण बेदी और पूर्व मंत्री मनीष कुमार ग्रोवर

महिला क्रिकेट वर्ल्ड कप में विश्व में भारत और हरियाणा का नाम रोशन करने वाली युवा क्रिकेटर शेफाली वर्मा अपने पैतृक रोहतक शहर में रविवार को आएंगी। जिला प्रशासन की ओर से रविवार सुबह करीब 10:00 बजे रोहद टोल सापला में स्वागत किया जाएगा। इसके बाद दिल्ली बाईपास से घनीपुरा स्थित निवास स्थान तक शेफाली वर्मा को खुली जीप में ले जाया जाएगा जहां, हरियाणा के सामाजिक न्याय मंत्री कृष्ण कुमार बेदी और पूर्व सहकारिता मंत्री मनीष कुमार ग्रोवर साथ रहेंगे। इससे पहले, सांपला स्थित रोहद टोल पर होने वाले सम्मान समारोह में एडीसी नरेंद्र कुमार और भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सतीश नांदल कार्यक्रम में मौजूद रहेंगे। शेफाली वर्मा के स्वागत के लिए जिला प्रशासन की ओर से भव्य तैयारी की गई है। स्वर्णकार संघ के पदाधिकारी और परिवार के सदस्य जोगेंद्र वर्मा ने बताया कि बेटी शेफाली वर्मा के स्वागत के लिए पूरी तैयारी की गई है। यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि देश को वर्ल्ड कप में चैंपियन बनाने के बाद हरियाणा और रोहतक की बेटी अपने घर आ रही है। प्रशासन ने भी अपने स्तर पर स्वागत की तैयारी की है। भारतीय जनता पार्टी के हरियाणा सरकार में कैबिनेट मंत्री कृष्ण कुमार बेदी और पूर्व सहकारिता मंत्री मनीष कुमार ग्रोवर दिल्ली बाईपास से रोहतक शहर के दिल्ली रोड होते हुए निवास स्थान तक खुली जीप में बेटी शेफाली वर्मा को लाया जाएगा। जहां उनका स्वागत किया जाएगा।

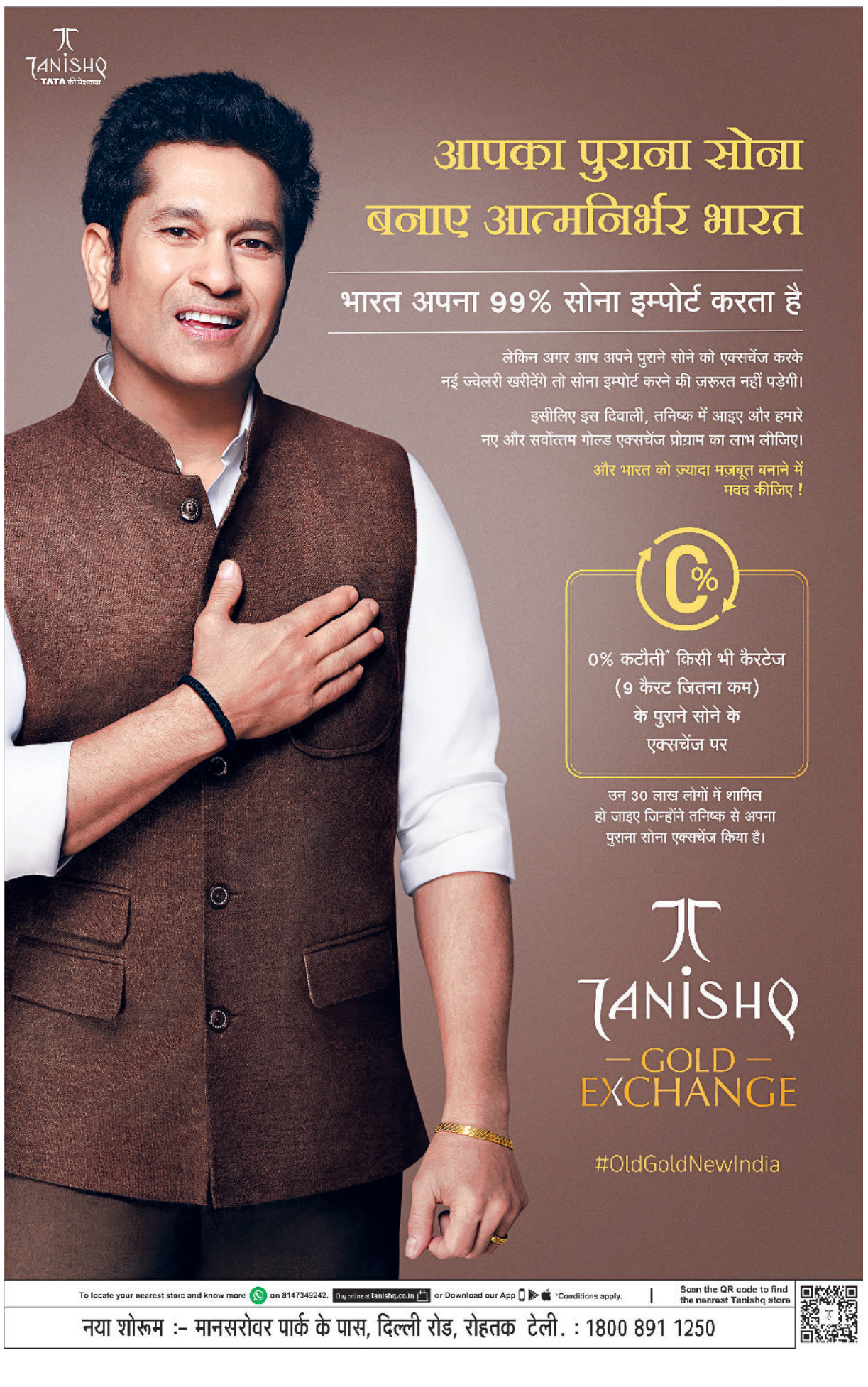

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय, आपको ग्रोथ ऑप्शन और डिविडेंड ऑप्शन में से एक का चयन करना होता है। ये दोनों ऑप्शन आपके निवेश के उद्देश्य और वित्तीय लक्ष्यों पर निर्भर करते हैं।

म्यूचुअल फंड के ग्रोथ या डिविडेंड ऑप्शन में से बेहतर क्या और क्यों?

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

निवेशकों के लिए क्या रहेगा फायदे का सौदा ग्रोथ और डिविडेंड किसमें मिलेगा ज्यादा फायदा, फैसला गलत हो जाए तो कैसे स्विच करें

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय कई बार निवेशकों को यह कनफ्यूजन हो सकता है कि किसी स्कीम का ग्रोथ ऑप्शन चुनें या डिविडेंड ऑप्शन बेहतर रहेगा? सही ऑप्शन का चुनाव आपके रिटर्न को बढ़ा सकता है, जबकि गलत सेलेक्शन से आपका मुनाफा घट सकता है। यही वजह है कि समझदारी से लिया गया फैसला आपके इनवेस्टमेंट की ग्रोथ को कई गुना बढ़ा सकता है। आमतौर पर ग्रोथ विकल्प बेहतर होता है, क्योंकि यह लंबी अवधि में चक्रवृद्धि ब्याज के कारण अधिक धन बनाता है, जबकि डिविडेंड विकल्प उन निवेशकों के लिए बेहतर है जो नियमित आय चाहते हैं। ग्रोथ में, फंड लाभ को फिर से निवेश करता है, जिससे निवेश का मूल्य समय के साथ बढ़ता है, जबकि डिविडेंड में, फंड आय वितरित करता है, जिससे चक्रवृद्धि ब्याज का प्रभाव कम हो जाता है। आइए इस रिग्र्ट में जानते हैं दोनों ऑप्शंस का फर्क, फायदे और स्विच करने के नियम।

ग्रोथ ऑप्शन के फायदे

म्यूचुअल फंड के ग्रोथ ऑप्शन में आपके निवेश पर जो भी मुनाफा बनता है, वो आपको कैश में नहीं दिया जाता है, बल्कि, वह पैसा दोबारा उसी म्यूचुअल फंड फिर से इनवेस्ट कर दिया जाता है। इसका फायदा यह होता है कि आपके मुनाफे पर भी मुनाफा जुड़ने लगता है, जिससे कंपाउंडिंग का बेनिफिट मिलता है। समय के साथ कंपाउंडिंग की यह ताकत आपकी पूंजी को तेजी से बढ़ाने में मदद करती है. यही वजह है कि ग्रोथ ऑप्शन में फंड की नेट एसेट वैल्यू यानी एनएवी ज्यादा तेजी से बढ़ती है।

डिविडेंड ऑप्शन क्या है

पहले जिसे डिविडेंड ऑप्शन कहा जाता था, उसे अब 'इनकम डिस्ट्रीब्यूशन कम कैपिटल विदड्रॉल' ऑप्शन यानी आईडीसीडब्ल्यू का नाम दे दिया गया है। इसमें फंड से मिलने वाला मुनाफा समय-समय पर निवेशकों में बांट दिया जाता है। हालांकि पेआउट की यह फ्रीक्वेंसी फिक्स नहीं होती, लेकिन जब भी ऐसा भुगतान किया जाता है, फंड की एनएवी घट जाती है। इसका मतलब है कि लंबे समय में आपकी पूंजी उतनी तेजी से नहीं बढ़ पाती जितनी ग्रोथ ऑप्शन में बढ़ सकती है। सेबी ने डिविडेंड ऑप्शन का नाम बदलकर आईडीसीडब्ल्यू इसलिए रखा, ताकि निवेशकों को यह समझ में आए कि इस पेआउट में कुछ हिस्सा आपकी अपनी पूंजी से निकलता है. यह कोई गारंटीड इनकम जैसा

विकल्प नहीं हैं।

कौन सा विकल्प सही

ग्रोथ और डिविडेंड ऑप्शन में आपके लिए कौन सा विकल्प सही है, यह पूरी तरह आपके आर्थिक लक्ष्य और निवेश के मकसद से तय होता है। अगर आप रिटायर्ड हैं या किसी वजह से रेगुलर इनकम (आपके लिए जरूरी है, तो आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन आपके लिए बेहतर हो सकता है, लेकिन अगर आप लंबी अवधि के लिए पैसे लगा रहे हैं और चाहते हैं कि आपका पैसा लगातार बढ़ता रहे, तो ग्रोथ ऑप्शन सही रहेगा। लंबे समय में देखा जाए तो ग्रोथ ऑप्शन आमतौर पर बेहतर रिटर्न देता है, क्योंकि इसमें कंपाउंडिंग का फायदा मिलता है। वहीं, आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन उन निवेशकों के लिए है जो समय-समय पर पैसा निकालना चाहते हैं और रेगुलर इनकम चाहते हैं।

गलत विकल्प चुन लिया हो तो क्या करें?

म्यूचुअल फंड में सही ऑप्शन चुनना उतना ही जरूरी है जितना सही फंड चुनना. दोनों की अपनी-अपनी खूबियां और सीमाएं हैं।

कई निवेशक शुरुआत में रेगुलर इनकम पाने के लिए या किसी कनफ्यूजन की वजह से आईडीसीडब्ल्यू चुन लेते हैं, लेकिन बाद में उन्हें महसूस होता है कि अगर उनका पूरा मुनाफा फंड में ही दोबारा निवेश होता, तो लंबे समय में बेहतर रिटर्न मिल सकता था। ऐसा होने पर निवेशक अपने पैसों को ग्रोथ ऑप्शन में स्विच कर सकते हैं, लेकिन उससे पहले म्यूचुअल फंड पर लागू होने वाले टैक्स के नियमों और एग्जिट लोड के असर को समझना जरूरी है।

आईडीसीडब्ल्यू से ग्रोथ ऑप्शन में कैसे स्विच करें

अगर आप अपने म्यूचुअल फंड इनवेस्टमेंट को डिविडेंड या आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन से ग्रोथ ऑप्शन में स्विच करना चाहते हैं, तो इसके लिए एक फॉर्म भरना होता है। फंड स्विचिंग की यह प्रॉसेस आमतौर पर 24 घंटे में पूरी हो जाती है, लेकिन याद रखें कि इस तरह का स्विच रिडेम्पशन और नई खरीदारी दोनों ही माना जाता है। इसका मतलब है कि आपको यूनिट होल्ड करने की अवधि के हिसाब से एग्जिट लोड और कैपिटल गेन्स टैक्स देना पड़ सकता है। इसलिए फैसला करने से पहले पूरी टैक्स देनदारी को जरूर समझ लें।

निवेश का उद्देश्य लंबी अवधि के लिए पूंजी की वृद्धि

डिविडेंड : डिविडेंड का भुगतान नहीं किया जाता है, बल्कि इसे फंड में पुनर्निवेश किया जाता है।
निवेश की वृद्धि : निवेश की वृद्धि होती है, जिससे आपका मूल निवेश बढ़ता है।
कर लाभ : ग्रोथ ऑप्शन में निवेश पर कर लाभ मिलता है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान नहीं किया जाता है।

समझदारी
बिजनेस डेस्क

डिविडेंड ऑप्शन

- **निवेश का उद्देश्य :** नियमित आय प्राप्त करना।
- **डिविडेंड :** डिविडेंड का भुगतान किया जाता है, जिससे आपको नियमित आय मिलती है।
- **निवेश की वृद्धि :** निवेश की वृद्धि कम होती है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान किया जाता है।
- **कर लाभ :** डिविडेंड ऑप्शन में निवेश पर कर लाभ नहीं मिलता है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान किया जाता है।

कब ग्रोथ ऑप्शन चुनें

- **लंबी अवधि के निवेशक :** यदि आप लंबी अवधि के लिए निवेश करना चाहते हैं और पूंजी की वृद्धि करना चाहते हैं।
- **नियमित आय की आवश्यकता नहीं :** यदि आपको नियमित आय की आवश्यकता नहीं है और आप अपने निवेश को बढ़ाना चाहते हैं।

कब डिविडेंड ऑप्शन चुनें

- नियमित आय की आवश्यकता : यदि आपको नियमित आय की आवश्यकता है और आप अपने निवेश से आय प्राप्त करना चाहते हैं।
- अल्पकालिक निवेशक : यदि आप अल्पकालिक निवेश करना चाहते हैं और नियमित आय प्राप्त करना चाहते हैं।

गलत फंड चुनने से बचना चाहते हैं तो निवेश से पहले जान लें ये टिप्स

- बाजार में मौजूद 250 से ज्यादा ईटीएफ में से अपने लिए सही फंड चुनना आसान नहीं
- लक्ष्य और कुछ बातों को ध्यान में रखेंगे तो सही फंड में निवेश करना आसान हो जाएगा

अपने लिए सही फंड चुनना किसी निवेशक के लिए बड़ी चुनौती
अगर गलत ईटीएफ चुन लिया, तो उसका रिटर्न पर बुरा असर पड़ेगा

जानकारी
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड निवेशकों के बीच एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। वजह साफ है। ईटीएफ बेहद कम खर्च में डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो बनाने का मौका देते हैं। इसके साथ ही उन्हें एक्सचेंज पर जाकर स्टॉक्स की तरह आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है, लेकिन बाजार में 250 से ज्यादा ईटीएफ मौजूद हैं। ऐसे में अपने लिए सही फंड चुनना किसी निवेशक के लिए बड़ी चुनौती हो सकता है। अगर गलत ईटीएफ चुन लिया, तो उसका आपके रिटर्न पर बुरा असर पड़ सकता है। अगर आप अपने निवेश के लिए सही ईटीएफ चुनना चाहते हैं, तो कुछ बातों पर ध्यान दें। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ ऐसे ही टिप्स जो आपको सही फंड चुनने में मदद करेंगे।

आपका ईटीएफ किस इंडेक्स को ट्रैक करता है

हर ईटीएफ किसी न किसी इंडेक्स को ट्रैक करता है। यानी आप इनडायरेक्ट तौर पर उस इंडेक्स में शामिल कंपनियों या एसेट्स में निवेश कर रहे होते हैं। मसलन, अगर आपका ईटीएफ निफ्टी 50 या सेंसेक्स को फॉलो करता है, तो आप उनके जरिये देश की टॉप कंपनियों की हिस्सेदारी खरीद रहे होते हैं। इसलिए यह जानना बेहद जरूरी है कि आपका चुना हुआ ईटीएफ किस इंडेक्स से जुड़ा है और क्या वह आपके निवेश के उद्देश्य से मेल खाता है। सही इंडेक्स का चुनाव लंबे समय में बेहतर रिटर्न की दिशा तय करता है।

ट्रैकिंग एरर पर रखिए खास नजर

हर ईटीएफ कोशिश करता है कि वह अपने बेंचमार्क इंडेक्स को हूबहू फॉलो करे, लेकिन हर बार ऐसा संभव नहीं होता. इस छोटे फर्क को ही ट्रैकिंग एरर कहा जाता है। अगर यह एरर कम है, तो ईटीएफ अपने इंडेक्स के रिटर्न से काफी हद तक मेल खाता है। वहीं, अगर ट्रैकिंग एरर ज्यादा है, तो आपके रिटर्न उम्मीद से कम हो सकते हैं। इसलिए हमेशा ऐसे ईटीएफ को चुनना बेहतर रहता है, जिसका ट्रैकिंग एरर कम से कम हो।

लिक्विडिटी यानी खरीदना-बेचना कितना आसान

निवेश का मकसद सिर्फ रिटर्न पाना नहीं होता, बल्कि आपके पास जरूरत पड़ने पर पैसा निकालने की बेहतर सुविधा होनी भी जरूरी है। इसलिए ईटीएफ की लिक्विडिटी बेहद अहम होती है। अगर किसी ईटीएफ में रोजाना अच्छा कारोबार होता है, यानी खरीदने और बेचने वालों की संख्या काफी है, तो उसे कभी भी बेचना आसान रहेगा, लेकिन अगर फंड का ट्रेडिंग वॉल्यूम कम है, तो आपको जरूरत पड़ने पर कम समय में अपनी यूनिट्स बेचने में दिक्कत का सामना करना पड़ सकता है। हमेशा ऐसे ईटीएफ का चुनाव करें जिसे जरूरत पड़ने पर आसानी से खरीदा या बेचा जा सके।

ईटीएफ के प्राइस और एनएवी में फर्क को समझें

ईटीएफ की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) यह बताती है कि उसमें शामिल एसेट्स का मौजूदा मूल्य कितना है। आम तौर पर ईटीएफ का मार्केट प्राइस उसके एनएवी के आसपास होना चाहिए, लेकिन कई बार मार्केट प्राइस इससे काफी ऊपर या नीचे भी ट्रेड करता है। अगर ईटीएफ का प्राइस उसकी एनएवी से काफी ज्यादा है, तो आप जरूरत से ज्यादा पैसे चुका रहे हैं। इसलिए निवेश से पहले हमेशा देखें कि ईटीएफ की कीमत उसकी एनएवी के करीब हो, ताकि आपका पैसा सही वैल्यू पर निवेश किया जा सके।

एक्सपेंस रेशियो पर ध्यान देना न भूलें

हर ईटीएफ को चलाने के लिए मैनेजमेंट कॉस्ट लगती है, जिसे एक्सपेंस रेशियो कहा जाता है। इसका आंकड़ा पहली नजर में भले ही बेहद छोटा लगे, लेकिन लंबे समय में यह आपके रिटर्न पर बड़ा असर डाल सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी ईटीएफ का एक्सपेंस रेशियो 0.05% है और दूसरे का 0.10%, तो शुरुआत में फर्क छोटा दिखेगा, पर साल दर साल यही फर्क आपके रिटर्न पर बड़ा असर डाल सकता है। इसलिए बाकी बातें समान रहने पर हमेशा उसी ईटीएफ का चुनाव करें, जिसका एक्सपेंस रेशियो कम हो। सही ईटीएफ का चुनाव करना किसी भी निवेशक के लिए बड़ा फैसला होता है, क्योंकि इसी से तय होता है कि आगे चलकर आपका निवेश कितना स्टेबल और फायदेमंद रहेगा।

सही फैसला लें

अगर आप ऊपर बताई गई बातों-बेंचमार्क इंडेक्स, ट्रैकिंग एरर, लिक्विडिटी, प्राइस-एनएवी डिफरेंस और एक्सपेंस रेशियो - को ध्यान में रखकर फंड चुनेंगे, तो सही फैसला लेना आसान होगा। याद रखें, सारे ईटीएफ एक जैसे नहीं होते। इसलिए जल्दबाजी में नहीं, बल्कि समझदारी के साथ सही ईटीएफ चुनें।

क्या है ईटीएफ

ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड) एक प्रकार का निवेश उत्पाद है जो शेयर बाजार में ट्रेड किया जाता है। यह एक म्यूचुअल फंड की तरह होता है, लेकिन इसे शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है जैसे कि शेयर।

ईटीएफ की विशेषताएं

1. **ट्रेडेबिलिटी :** ईटीएफ को शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है।
2. **डाइवर्सिफिकेशन :** ईटीएफ में विभिन्न प्रकार के शेयर, बॉन्ड, या अन्य सिक्योरिटीज शामिल होते हैं।
3. **लो कॉस्ट :** ईटीएफ की फीस आम तौर पर म्यूचुअल फंड की तुलना में कम होती है।
4. **ट्रांसपेरेंसी :** ईटीएफ के पोर्टफोलियो की जानकारी दैनिक रूप से उपलब्ध होती है।

ईटीएफ के प्रकार

1. **इक्विटी ईटीएफ :** ये ईटीएफ शेयर बाजार में निवेश करते हैं।
2. **बॉन्ड ईटीएफ :** ये ईटीएफ बॉन्ड में निवेश करते हैं।
3. **सेक्टोरल ईटीएफ :** ये ईटीएफ विशिष्ट क्षेत्रों में निवेश करते हैं।
4. **इंटरनेशनल ईटीएफ :** ये ईटीएफ विदेशी शेयर बाजार में निवेश करते हैं।
5. **गोल्ड ईटीएफ :** ये ईटीएफ सोने में निवेश करते हैं।

ईटीएफ के लाभ

1. **डाइवर्सिफिकेशन :** ईटीएफ में विभिन्न प्रकार के शेयर या सिक्योरिटीज शामिल होते हैं।
2. **लो कॉस्ट :** ईटीएफ की फीस आम तौर पर कम होती है।
3. **ट्रेडेबिलिटी :** ईटीएफ को शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है।
4. **ट्रांसपेरेंसी :** ईटीएफ के पोर्टफोलियो की जानकारी दैनिक रूप से उपलब्ध होती है।

ईटीएफ के जोखिम

1. **मार्केट जोखिम :** ईटीएफ के मूल्य में उतार-चढ़ाव हो सकता है।
2. **लिक्विडिटी जोखिम :** ईटीएफ की लिक्विडिटी कम हो सकती है।
3. **ट्रैकिंग एरर :** ईटीएफ का प्रदर्शन उसके अंडरलाइंग इंडेक्स के प्रदर्शन से भिन्न हो सकता है।

आय का मुख्य स्त्रोत आप खुद हैं या परिवार पर आपकी जिम्मेदारी तो यह सही कदम

कई बार बैंक सिर्फ अपने कमीशन के लिए भी लोन इंश्योरेंस बेचते हैं

एजेंट की बातों से न हों कनफ्यूज, लोन का इंश्योरेंस का कदम सही या गलत ऐसे समझें

सलाह
बिजनेस डेस्क

जब आप कोई लोन लेते हैं, तो बैंक या एजेंट अक्सर लोन इंश्योरेंस लेने की सलाह देते हैं, लेकिन क्या वाकई इसकी जरूरत होती है? हर स्थिति में नहीं। लोन इंश्योरेंस समझदारी का कदम तब है जब आपकी आय का मुख्य स्त्रोत आप खुद हैं या परिवार पर आपकी जिम्मेदारी है, लेकिन कई बार बैंक सिर्फ अपने कमीशन के लिए भी इसे बेचते हैं। इसलिए आप एजेंट की बातों के कनफ्यूज न हों और अपने लिए सही विकल्प चुनें। तभी आप लोन लेकर खुद को सुरक्षित कर सकते हैं, वरना कई यह आपके गले की फांस भी बन सकता है। अक्सर जब आप बैंक या एनबीएफसी से पर्सनल लोन, होम लोन या कार लोन लेने जाते हैं, तो एजेंट आपको एक और प्रोडक्ट बेचने की कोशिश करता है- लोन इंश्योरेंस वह कहता है कि अगर किसी वजह से आप लोन नहीं चुका पाए तो यह इंश्योरेंस आपकी ईएमआई भर देगा या आपके परिवार पर बोझ नहीं डालेगा। पहली नजर में यह बात सही लगती है, लेकिन असल में हर बार लोन इंश्योरेंस लेना फायदेमंद नहीं होता है। कई बार यह सिर्फ बैंक या एजेंट का कमिशन कमाने का तरीका होता है। इसलिए बिना समझे इंश्योरेंस खरीदना नुकसानदायक हो सकता है।

लोन इंश्योरेंस होता क्या है?

लोन इंश्योरेंस एक ऐसी पॉलिसी होती है जो यह सुनिश्चित करती है कि अगर किसी वजह से लोन लेने वाला व्यक्ति ईएमआई नहीं भर पाता, तो इंश्योरेंस कंपनी बाकी ईएमआई का भुगतान करेगी। इसका मकसद बैंक या लेंडर को डिफॉल्ट रिस्क से बचाना होता है, लेकिन ध्यान दीजिए कि यह सुरक्षा आपके परिवार के लिए नहीं, बल्कि बैंक के लिए होती है। यानी बैंक को तो उसका पैसा मिल जाता है, पर आपके परिवार को सीधा फायदा नहीं होता।

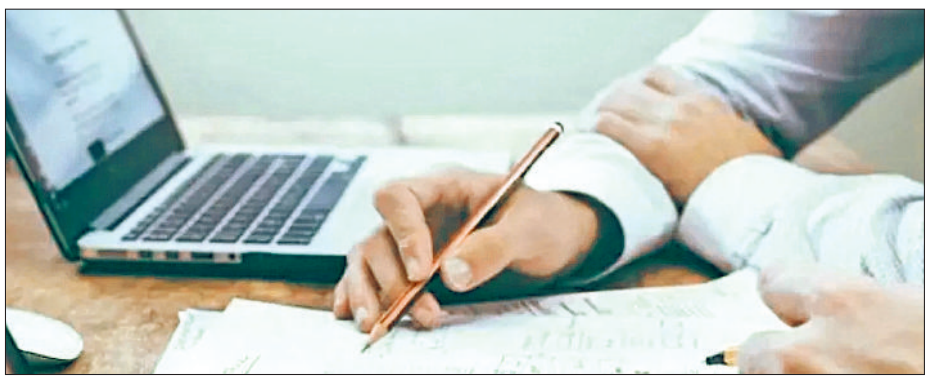

कब जरूरी है लोन इंश्योरेंस?

हर लोन के साथ इंश्योरेंस जरूरी नहीं, लेकिन कुछ परिस्थितियों में यह समझदारी भरा कदम हो सकता है।

1. **होम लोन या बड़ी रकम वाला लोन :** अगर आपने लंबी अवधि के लिए होम लोन या बिजनेस लोन लिया है, तो इंश्योरेंस आपको और परिवार को राहत दे सकता है।
2. **अगर आप सोल ब्रेडविनर हैं :** अगर परिवार में कमाने वाले आप ही हैं और किसी कारणवश आपकी मृत्यु हो जाए या नौकरी छूट जाए, तो यह पॉलिसी बाकी लोन चुका सकती है।
3. **अगर आपका प्रोफेशन रिस्की है :** जो लोग खतरनाक कामों में हैं या फिर मेडिकल इंडस्ट्री में हैं, तो उनके लिए यह इंश्योरेंस जरूरी है।

कब नहीं लेना चाहिए लोन इंश्योरेंस?

कई बार बैंक या एजेंट आपको डर दिखाकर यह पॉलिसी थमा देते हैं, लेकिन हर केस में इसकी जरूरत नहीं होती।

1. **अगर आपके पास लाइफ इंश्योरेंस पहले से है :** अगर आपके पास पर्याप्त टर्म इंश्योरेंस है, तो अलग से लोन इंश्योरेंस लेने की जरूरत नहीं है। आपका टर्म प्लान परिवार को पूरी सुरक्षा देता है।
2. **अगर लोन छोटी अवधि का है :** जैसे पर्सनल लोन 1-2 साल के लिए हो या कार लोन बहुत छोटी रकम का हो, तो उस पर इंश्योरेंस का प्रीमियम देना बेकार है।
3. **अगर ईएमआई आपकी इनकम का छोटा हिस्सा है :** जब ईएमआई आपकी इनकम का सिर्फ 10-15% हो, तो अतिरिक्त इंश्योरेंस का खर्च आपकी जेब पर बोझ बन सकता है।

एजेंट से कनफ्यूज ना हों

एजेंट या बैंक अधिकारी कई बार कहते हैं कि बिना इंश्योरेंस लोन अप्रूव नहीं होगा, लेकिन यह पूरी तरह गलत है। आरबीआई और इरडा दोनों ने साफ किया है कि लोन इंश्योरेंस कभी भी अनिवार्य नहीं होता। अक्सर ग्राहक कनफ्यूज होकर पॉलिसी ले लेता है, जो बाद में बेकार साबित होती है।

कितना होता है लोन इंश्योरेंस का प्रीमियम?

अगर आप 10 लाख रुपये का लोन करीब 5 साल के लिए लेते हैं तो उस पर आपको 10-12 हजार रुपये का इंश्योरेंस प्रीमियम लग सकता है। यह प्रीमियम कम-ज्यादा हो सकता है और आप इस पर बारगेनिंग भी कर सकते हैं। यह प्रीमियम या तो आपसे एकमुश्त लिया जाता है या लोन राशि में जोड़ दिया जाता है। मतलब, कुछ मामलों में आप उसके ऊपर भी ब्याज चुकाते हैं।

क्या लोन इंश्योरेंस टैक्स बेनिफिट देता है?

कुछ लोन इंश्योरेंस प्रीमियम पर टैक्स बेनिफिट मिल सकता है, लेकिन यह इंश्योरेंस के प्रकार पर निर्भर करता है। अगर पॉलिसी लाइफ इंश्योरेंस कैटेगरी में आती है, तो सेक्शन 80सी के तहत छूट मिल सकती है, लेकिन अगर यह केवल क्रेडिट प्रोटेक्शन पॉलिसी है, तो टैक्स बेनिफिट नहीं मिलता।

सही निर्णय कैसे लें?

1. **तुलना करें :** विभिन्न इंश्योरेंस कंपनियों के प्रीमियम और कवरेज की तुलना करें।
2. **एजेंट की बातों पर आंख मूंदकर भरोसा न करें :** हर सलाह के पीछे कमीशन छिपा हो सकता है।
3. **अपनी जरूरत देखें :** अगर आपका लोन छोटा है या पहले से टर्म इंश्योरेंस है, तो अतिरिक्त इंश्योरेंस की जरूरत नहीं।
4. **पॉलिसी डॉक्युमेंट पढ़ें :** साइन करने से पहले उसके सभी दस्तावेजों को जरूर समझें। यानी किन परिस्थितियों में क्लेम नहीं मिलेगा।

लोन इंश्योरेंस एक अच्छा सेफ्टी नेट

लोन इंश्योरेंस एक अच्छा सेफ्टी नेट है, लेकिन हर किसी के लिए जरूरी नहीं। अगर आपके ऊपर बड़ा लोन है, परिवार आप पर निर्भर है या आपकी हेल्थ रिस्की है, तो इसे लेना समझदारी है, लेकिन अगर आपका लोन छोटा है, ईएमआई कंट्रोल में है और टर्म इंश्योरेंस पहले से है, तो एजेंट की बातों में आकर इंश्योरेंस लेने की जरूरत नहीं। हमेशा याद रखें कि लोन इंश्योरेंस बैंक के लिए सुरक्षा है, आपके लिए नहीं।

पं. नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय में क्षेत्रीय युवा महोत्सव का समापन

विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा की उड़ान

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ मुख्य अतिथि, अतिथि एवं कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुरेंद्र सिंह सांगवान ने संयुक्त रूप से किया

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

रोहतक। क्षेत्रीय युवा महोत्सव में अपनी प्रस्तुति देते प्रतिभागी।

रोहतक। विजेता टीम को सम्मानित करते कुलपति प्रो. राजबीर सिंह।

पंडित नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय में चल रहे क्षेत्रीय युवा महोत्सव का सफलतापूर्वक समापन हुआ। अंतिम दिन विद्यार्थियों में उत्साह और जोश का वही रंग देखने को मिला जो पहले दिन की ऊर्जा को पुनर्जीवित कर रहा था। प्रातःकालीन सत्र के मुख्य अतिथि मदवि के रजिस्ट्रार डॉ. कृष्णकांत, गेस्ट ऑफ ऑनर डॉ. लक्ष्मी गुप्ता रहीं। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ मुख्य अतिथि, अतिथि एवं कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुरेंद्र सिंह सांगवान ने संयुक्त रूप से किया। डॉ. कृष्णकांत ने कहा कि आज के युवा अनुशासन, परिश्रम और लगन से देश को नई दिशा दे रहे हैं। हार-जीत जीवन का हिस्सा है। निराश होने की आवश्यकता नहीं, बल्कि उठो, प्रयास करो और आगे बढ़ो। विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा के माध्यम से परिवार, समाज और देश का नाम रोशन करने की प्रेरणा दी। सायंकालीन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. डॉ. राजबीर सिंह , कुलपति, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रहे। उनके साथ गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में करण सिंह पुनिया, समाजसेवी व सपना गर्ग रहीं। कुलपति प्रो. राजबीर ने कहा कि ऐसे युवा महोत्सव विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा, सृजनशीलता और आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं। यही मंच युवाओं को नई उड़ान और दिशा प्रदान करते हैं।

- गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में करण सिंह पुनिया, समाजसेवी व सपना गर्ग रहीं

प्राचार्य डॉ. सुरेंद्र सिंह सांगवान ने सभी का आभार जताया

कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्राचार्य डॉ. सुरेंद्र सिंह सांगवान ने सभी अतिथियों, निर्णायकों, आयोजक सदस्यों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह महोत्सव युवाओं की ऊर्जा और संस्कृति के संगम का प्रतीक रहा है।

रोहतक। विजेता विद्यार्थियों को बधाई देते प्राचार्य डॉ. जयपाल शर्मा। फोटो : हरिभूमि

गौड़ ब्राह्मण डिग्री कॉलेज के विद्यार्थियों ने क्षेत्रीय युवा महोत्सव में मारी बाजी

प्रभजीत ने शास्त्रीय वाद्य वर्ग में किया प्रथम स्थान हासिल, गोविंद दास रहे द्वितीय

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय द्वारा पंडित नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय में आयोजित क्षेत्रीय युवा महोत्सव में गौड़ ब्राह्मण डिग्री कॉलेज के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कॉलेज का नाम रोशन किया। कॉलेज के छात्र प्रभजीत ने शास्त्रीय वाद्य वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया, वहीं गोविंद दास ने शास्त्रीय वाद्य (गैर-टक्कर) वर्ग में द्वितीय स्थान हासिल किया।

संगीत विभाग की मेहनत और विद्यार्थियों की लगन का परिणाम

कॉलेज के प्राचार्य डॉ. जयपाल शर्मा ने दोनों विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि कॉलेज के संगीत विभाग की निरंतर मेहनत और विद्यार्थियों की लगन का नतीजा है। इस तरह की सफलताएं न केवल विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं बल्कि कॉलेज को सांस्कृतिक और शैक्षणिक क्षेत्र में नई पहचान दिलाती हैं। डॉ. शर्मा ने विश्वास जताया कि कॉलेज के विद्यार्थी भविष्य में भी इसी जोश और समर्पण के साथ प्रदर्शन करते हुए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर महाविद्यालय का नाम रोशन करेंगे। उन्होंने आग्रह किया कि वे कला को और निखारते रहें तथा ऐसे आयोजनों में सक्रिय रूप से भाग लें।

शिक्षकों और समिति सदस्यों ने दी शुभकामनाएं

मौके पर महाविद्यालय सांस्कृतिक समिति के समन्वयक डॉ. सुरेंद्र शर्मा , संगीत विभागाध्यक्ष डॉ. गीता पाठक, डॉ. कपिल कौशिक, डॉ. पूजा दुहन, डॉ. पूनम गौतम और गीता शर्मा उपस्थित रहे। सभी ने विजेता विद्यार्थियों को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित शिक्षकों और विद्यार्थियों ने दोनों प्रतिभागियों का सम्मान किया और उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की। पूरे कॉलेज में खुशी और गर्व का माहौल है।

खबर संक्षेप

विश्व रेडियोलॉजी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

रोहतक। विश्व रेडियोलॉजी दिवस पर पीजीआईएमएस रेडियोलोजी विभाग व रेडियोग्राफर एसोसिएशन के तत्वाधान में विभाग के सेमिनार हाल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभागाध्यक्षा वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. ज्योत्सना द्वारा दीप प्रज्वलित कर व सर रोंजन की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। बैचलर इन रेडियोग्राफी छात्र सुमित खुराना द्वारा द्वारा रिप्रेजेंटेशन के माध्यम से एक्स रे की खोज व उसके बाद की विभागीय यात्रा को सभी के समक्ष रखा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्षा वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. ज्योत्सना ने विभाग के चिकित्सक, कर्मचारियों व छात्रों को शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

बैंकिंग सुविधाओं का उपयोग करें ग्रामीण

रोहतक। ग्रामीण नागरिकों को वित्तीय प्रणाली की मूलभूत जानकारियों से अवगत कराने तथा सुरक्षित एवं समझदारीपूर्ण तरीक़े से वित्तीय लेन–देन करने के प्रति जागरूक करने हेतु भारतीय रिजर्व बैंक, चंडीगढ़ कार्यालय द्वारा गांव किशनगढ़, रोहतक में एक फील्ड-स्तरीय वित्तीय साक्षरता एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं अन्य गणमान्य अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया, जिसके उपरांत इस वर्ष 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में वंदे मातरम्' का सामूहिक गायन भी किया गया । इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय रिजर्व बैंक के महाप्रबंधक पंकज सेतिया थे।

जनता मूलभूत सुविधाओं के लिए तरसी : राकेश सहगल

पत्रकारों से बातचीत करते इनेलो के शहरी जिला अध्यक्ष राकेश सहगल व कृष्ण कौशिक एडवोकेट।

रोहतक। इनेलो के शहरी जिला अध्यक्ष राकेश सहगल ने आरोप लगाया कि जिले में अफरशाही हावी हो चुकी है, जिसके चलते जनता पूरी तरह परेशान है। उन्होंने कहा कि मूलभूत सुविधाओं के लिए लोग तरस रहे हैं, लेकिन उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही है और जनता दर दर की ठोकरे खाने पर मजबूर है। उन्होंने सरकार को तीस दिन का अल्टीमेटम दिया कि अगर लोगों की समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो इनेलो पार्टी सड़कों पर उतरेगी। इनेलो शहरी जिला अध्यक्ष राकेश सहगल शनिवार को मैना पर्यटक केन्द्र में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कांग्रेस विधायक बीबी बतरा को लेकर भी निशाना साधा और कहा कि शहर के लोग मूलभूत सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं, लेकिन विधायक ने मुंह पर पट्टी लगाकर पूरी तरह से मौन धारण किया हुआ है। उन्होंने विधायक से नैतिकता के आधार पर इस्तीफा भी मांगा। साथ ही राकेश सहगल ने कहा कि स्वच्छ पेयजल के लिए लोग तरस रहे है, शहर कूडे का डेर बन चुका है, टूटी सड़क लोगों के लिए जी का जंजाल बनी हुई है। अतिक्रमण के नाम पर व्यापारियों व गरीब लोगों को निशाना बनाया जा रहा है। इस अवसर पर कृष्ण कौशिक एडवोकेट, सतीश नांदल रिठाल, हरेन्द्र सिंह लक्की, निट्टू सरदार, सुधीर मलिक, बल्लू प्रधान खेड़ी साध, राजबीर वाल्मीकि, वीरेन्द्र नांदल, डॉ. स्वतंत्र आनंद देशवाल, बबलू नरवाल, रामभगत लाकडा, विनोद अहलावत एडवोकेट, सूरज देहराज प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में सीपीआर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

विद्यार्थियों को सिखाई जीवन रक्षक तकनीकें

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय रोहतक के नर्सिंग संकाय में सीपीआर (कार्डियो पल्मोनरी रिससिटैशन) पर एक जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों और शिक्षकों को आपातकालीन परिस्थितियों में किसी व्यक्ति का जीवन बचाने के लिए आवश्यक सीपीआर तकनीकों की जानकारी और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में मैक्स हेल्थकेयर, गुड़गांव से रजनीश शर्मा (सीनियर ऑफिसर) ने शिरकत की। उन्होंने कहा कि सीपीआर जैसी तकनीक केवल चिकित्सकों के लिए ही नहीं, बल्कि आम नागरिकों के लिए भी जीवन रक्षक सिद्ध हो सकती हैं। प्रत्येक व्यक्ति को इनका बुनियादी ज्ञान होना चाहिए। प्रशिक्षण सत्र का संचालन प्रसिद्ध एएचए (अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन) से प्रशिक्षित विशेषज्ञ अभिषेक पुनिया, पारुल विज व राहुल द्वारा किया गया। उन्होंने प्रतिभागियों को सीपीआर की चरणबद्ध प्रक्रिया, आपात स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया, और चेन ऑफ सर्वाइवल की महत्ता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। विद्यार्थियों को मैनेक्विन मॉडल के माध्यम से हाथों-हाथ अभ्यास भी करवाया गया ताकि वे इस तकनीक को व्यावहारिक रूप से समझ सकें। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. (डॉ.) बीएम यादव ने की। स्वास्थ्य शिक्षा का उद्देश्य केवल चिकित्सा ज्ञान देना नहीं, बल्कि समाज में संवेदनाओं और सेवा की भावना को भी जागृत करना है।

विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया

कुलसचिव प्रो. (डॉ.) विनोद कुमार और नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्या डॉ. मीना रानी ने भी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया और इस पहल की सराहना की। इस मौके पर नर्सिंग संकाय की अध्यापिका मनीषा, रितिका, रीतू, मीनाक्षी, पूनम, शिवानी, कीर्ति, हिमानी और पूजा उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के संचालन में सक्रिय भूमिका निभाई।

हॉकी फेडरेशन के 100 वर्ष पूरे होने पर कार्यक्रम आयोजित

रोटरी क्लब ऑफ रोहतक हेरिटेज ने खिलाड़ियों को दिया सम्मान

रोहतक। हॉकी फेडरेशन के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में रोटरी क्लब ऑफ रोहतक हेरिटेज की ओर से जाट कॉलेज रोहतक के ग्राउंड में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्लब की टीम ने शहर के जरूरतमंद 50 हॉकी खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुए उन्हें ट्रैक सूट और हॉकियां भेंट कीं। कार्यक्रम का संचालन हॉकी कोच कृष्ण कुमार सैनी के नेतृत्व में किया गया। क्लब के प्रधान डॉ. राजीव धमीजा ने अपने सभी क्लब साथियों के साथ खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। इस मौके पर क्लब के सदस्य शेखर बत्रा, संजीव धमीजा, संजय खुराना, संजय जैन, कृष्ण खेतरपाल, डॉ. संजय दुआ, विशाल भाटिया, रमन गिरोत्रा, संदीप महेन्द्रु और अमित गांधी विशेष रूप से उपस्थित रहे। क्लब प्रधान डॉ. राजीव धमीजा ने खिलाड़ियों को मेहनत और अनुशासन के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। डॉ. धमीजा ने इस अवसर पर हॉकी फेडरेशन के 100 वर्ष पूरे होने पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ऐसे अवसर हमें खेल भावना को सशक्त करने और युवाओं में जोश भरने का मौका देते हैं। उन्होंने कहा कि रोटरी क्लब समाज के हर वर्ग के विकास के लिए प्रतिबद्ध है और खेलों के प्रोत्साहन में क्लब की भूमिका हमेशा आगे रहेगी। कार्यक्रम के अंत में खिलाड़ियों ने क्लब के सदस्यों का आभार जताया और बेहतर खेल प्रदर्शन का संकल्प लिया।

आदर्श स्कूल मदीना में शिक्षकों को दिए मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर रखने के टिप्स

महम। आदर्श स्कूल मदीना में मानसिक स्वास्थ्य विषय पर शिक्षकों के लिए जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मदीना में अध्यापकों के लिए मानसिक स्वास्थ्य विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में गुरुकुल हाई स्कूल भैयापुर से बतौर ट्रेनर वहां के शिक्षाविद अभिलाष पहुंचे। अभिलाष ने शिक्षकों को मानसिक स्वास्थ्य का महत्व बताया और संतुलित जीवनशैली पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आज के प्रतिस्पर्धी युग में तनाव, चिंता और मानसिक असंतुलन जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे में आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहे और सकारात्मक सोच बनाए रखे। कार्यशाला के दौरान उन्होंने योग, ध्यान, आत्मचिंतन और सामूहिक गतिविधियों के माध्यम से तनाव प्रबंधन के व्यावहारिक उपाय भी साझा किए। अभिलाष ने सभी प्रतिभागी शिक्षकों को सुझाव दिया कि वे कार्यशाला में सीखी गई बातों को अपने कक्षा-कक्ष में भी लागू करें। प्रिंसिपल मंजूलता ने बताया कि एक अध्यापक केवल ज्ञान देने वाला नहीं होता, बल्कि वह अपने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने में एक मनोवैज्ञानिक की भूमिका भी निभाता है।

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निवास करता

आदर्श शिक्षण संस्थान के शैक्षणिक निदेशक मनविजय ने सभी स्टाफ सदस्यों से कहा कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निवास करता है। इसलिए मानसिक स्वास्थ्य के हमें शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहना चाहिए। प्रसन्नचित मन से मानसिक शांति मिलती है और तनाव कम होता है। तनाव कम होने से रक्तचाप नियंत्रित रहता है, नींद की गुणवत्ता सुधरती है और शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है। जब मन शांत और स्थिर होता है तो व्यक्ति स्पष्ट रूप से सोच सकता है और बेहतर व तर्क संगत निर्णय ले सकता है।

एमडीयू ने महिला स्वच्छता कर्मियों के प्रकरण में की सख्त-त्वरित कार्रवाई

रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय ने एचकेआरएन के माध्यम से नियुक्त महिला स्वच्छता कर्मियों द्वारा की गई शिकायत के संबंध में त्वरित, निष्पक्ष एवं सख्त कार्रवाई करते हुए स्पष्ट संदेश दिया है कि विवि परिसर में महिला सम्मान से समझौता स्वीकार्य नहीं है। विवि की ओर से जारी जानकारी के अनुसार 27 अक्तूबर 2025 को कुछ महिला स्वच्छता कर्मियों ने शिकायत दी थी कि 26 अक्तूबर 2025 को राज्यपाल कुलाधिपति के विवि आगमन के दौरान साफ-सफाई की व्यवस्था के समय संबंधित पर्यवेक्षकों एवं प्राधिकृत अधिकारी द्वारा उनके साथ अपमानजनक व्यवहार किया गया। इसी दिन संबंधित शाखा के सहायक रजिस्ट्रार श्याम सुंदर द्वारा भी कुछ सफाई कर्मियों के दुर्व्यवहार संबंधी शिकायत प्रस्तुत की गई।

दो कर्मियों पर गिरी थी गाज

दोनों शिकायतों को कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने गंभीरता से लेते हुए उसी दिन दोनों सैनिटरी सुपरवाइजर्स वितेन्दर कुमार एवं विनोद कुमार को तत्काल निलंबित करने के आदेश दिए। मामले को 28 अक्तूबर को विवि की आंतरिक शिकायत समिति को सौंप दिया गया तथा संबंधित प्रकरण थाना पीजीआईएमएस के एसएचओ को भी कार्रवाई के लिए भेजा गया। आंतरिक शिकायत समिति ने शिकायतकर्ताओं, प्रतिवादियों एवं संबंधित गवाहों के लिखित एवं मौखिक बयान, दस्तावेजी एवं परिस्थितिजन्य साक्ष्यों का परीक्षण करते हुए, जांच रिपोर्ट 5 नवम्बर को कुलपति को प्रेषित की। समिति की अनुशंसाओं पर विचार कर सक्षम प्राधिकारी ने निर्णय लिया कि एचकेआरएन के तहत अनुबंधित दोनों सैनिटरी सुपरवाइजर्स वितेन्दर कुमार एवं विनोद कुमार की सेवाएं तत्काल प्रभाव से समाप्त करने की संस्तुति की जाए तथा सहायक रजिस्ट्रार (सामान्य प्रशासन) श्याम सुंदर को उनके कृत्यों एवं अकृत्यों के संबंध में विभागीय कार्रवाई लंबित रहते हुए निलंबित किया जाए। कुलपति द्वारा स्वीकृत निर्णय के अनुरूप श्याम सुंदर, सहायक रजिस्ट्रार को 6 नवम्बर 2025 से निलंबित कर दिया गया है, जबकि दोनों सैनिटरी सुपरवाइजर्स के अनुबंध समाप्त करने हेतु एचकेआरएन को 6 नवम्बर 2025 को ही अनुशंसा भेज दी गई है तथा सभी संबंधित दस्तावेज एचकेआरएन पोर्टल पर अपलोड कर दिए गए हैं।

सम्मान प्राथमिकता

कुलसचिव डॉ. कृष्णकांत ने स्पष्ट किया है कि कार्यस्थल पर महिलाओं की गरिमा, सुरक्षा एवं सम्मान सर्वोच्च प्राथमिकता है। कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने स्पष्ट कहा है कि मदवि परिसर को सुरक्षित, सम्मानजनक एवं संवेदनशील कार्यस्थल बनाने के लिए विश्वविद्यालय पूर्णतः प्रतिबद्ध है और इस प्रकार के मामलों में शून्य सहनशीलता (जीरो टॉलरेंस) की नीति का अनुसरण करता है।

भारत और नेपाल के विभिन्न स्कूलों की टीमों ने भाग लिया

जीडी गोयंका इंटरनेशनल के स्केटर्स ने जीता स्वर्ण

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

जीडी गोयंका इंटरनेशनल स्कूल के सीनियर वर्ग की स्केटिंग टीम ने नेपाल के पोखरा शहर में आयोजित इंडो-नेपाल सीजीएडीएफ गेम्स इंटरनेशनल सीरीज में स्वर्ण पदक जीतकर विद्यालय और रोहतक का नाम गौरवान्वित किया है। इस अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भारत और नेपाल के विभिन्न स्कूलों की टीमों ने भाग लिया। जीडी गोयंका स्कूल के विद्यार्थियों रेहान, रेयांश, आरव रमन, अर्नव, अवि, प्रिंस और मानवीर ने स्पीड स्केटिंग प्रतियोगिता में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से स्वर्णिम सफलता प्राप्त की। उल्लेखनीय है कि इंडो-नेपाल एसजीएडीएफ गेम्स को अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति से मान्यता प्राप्त है, और यह प्रतियोगिता विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करती है।

- इंडो-नेपाल सीजीएडीएफ इंटरनेशनल गेम्स में शानदार प्रदर्शन, स्कूल का नाम किया रोशन

विद्यालय के निदेशक विक्रांत मायना एवं सान्या मायना ने विजेता टीम व स्केटिंग कोच शिव को बधाई देते हुए कहा कि कोच के अथक परिश्रम और विद्यार्थियों की दृढ़ इच्छाशक्ति ने इस सफलता को संभव बनाया है। प्रधानाचार्या सविता नेहरा ने कहा कि ऐसा कोई भी दिन नहीं जाता जब हमारे छात्र हमें गर्वित न करें। उनके समर्पण और मेहनत से विद्यालय का गौरव लगातार बढ़ रहा है।

सह निदेशक हिमांशु गुप्ता ने सभी विजेता विद्यार्थियों व कोच का अभिनंदन करते हुए उन्हें भविष्य में और भी ऊंचाइयां छूने की शुभकामनाएं दीं।

वैश्य महाविद्यालय में नशा मुक्ति जागरूकता कार्यक्रम

रोहतक। स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित करते प्राचार्य डॉ. फूल सिंह यादव।

रोहतक। वैश्य महाविद्यालय में यूथ रेड क्रॉस, रेड रिबन क्लब एवं एनएसएस इकाई के संयुक्त तत्वावधान में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। वाईआरसी समन्वयक डॉ. विनीत बाला ने नशे की बीमारी से मुक्ति, नशे के बारे में पैदा हुई गलत धारणाओं व नशा प्रयोग करने वाले व्यक्ति के मुख्य लक्षणों आदि की जानकारी विस्तार से देकर नशा न करने के लिए विद्यार्थियों को जागरूक किया। एनएसएस समन्वयक डॉ. पिंकी यादव एवं डॉ. मुकेश कुमार ने विद्यार्थियों को समाज को नशामुक्त बनाने की शपथ दिलाई। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. फूल सिंह यादव ने कहा कि नशा मुक्त भारत अभियान का उद्देश्य न केवल अपने परिवार, समाज बल्कि सम्पूर्ण देश को नशे से मुक्त करना है। इस उपलक्ष्य में स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसमें 68 विद्यार्थियों ने भाग लिया। आरआरसी समन्वयक डॉ. मधु ने बताया की प्रतियोगिता में शिक्षा व साक्षी ने प्रथम स्थान, ईशा ने द्वितीय स्थान एवं पूजा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में विकास चाहर, डॉ वीरेंद्र खुराना सहित अन्य संकाय सदस्य मौजूद रहे।

रोहतक और आसपास के क्षेत्रों के 105 हिंदी अध्यापकों ने भाग लिया

पठानिया स्कूल में हिंदी भाषा शिक्षण पर कार्यशाला

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

रोहतक। पठानिया पब्लिक स्कूल में मधुबन एजुकेशनल पब्लिकेशन्स के सौजन्य से हिंदी भाषा शिक्षण पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ. प्रदीप कुमार जैन रहे, जो लंबे समय से एनसीईआरटी, एससीईआरटी, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान से जुड़े हुए हैं। डॉ. जैन ने शिक्षकों को नई शिक्षा नीति, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, प्रभावी भाषा शिक्षण विधियां, रचनात्मक लेखन, व्याकरण शिक्षण और कक्षा-कक्ष में नवाचारों पर विस्तारपूर्वक व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान किया। कार्यशाला में रोहतक और आसपास के क्षेत्रों के 105 हिंदी अध्यापकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। विद्यालय प्रबंधन निदेशक अंशुल पठानिया, सह-संस्थापक वर्षा पठानिया, प्रधानाचार्या तन्वी पठानिया और उप-प्रधानाचार्या प्रीति ढांडा ने मधुबन पब्लिकेशन्स का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की दक्षता बढ़ाने और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर को उन्नत करने में अत्यंत उपयोगी हैं। डॉ. प्रदीप कुमार जैन का मार्गदर्शन प्रेरणादायी रहा और इस तरह की कार्यशालाएं शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में मील का पत्थर सिद्ध होती हैं। कार्यक्रम का समापन प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान कर किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की हिंदी विभाग की समन्वयक आलोक हुड्डा, कनिका मग्गू और प्रभा शर्मा सहित सभी हिंदी अध्यापक उपस्थित रहे। मधुबन एजुकेशनल बुक्स की ओर से गौरव शर्मा, दीपक सिंधु और त्रिलोक ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

एमडीयू एम्पलाइज क्रिकेट टीम का 21वें ऑल इंडिया वाइस चांसलर कप में जीत का सफर जारी

रोहतक। क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लेते एमडीयू की टीम।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय एम्पलाइज क्रिकेट टीम ने 21वें ऑल इंडिया वाइस चांसलर टी 20 क्रिकेट कप में जीत का सफर आगे बढ़ाते हुए आज दूसरे मैच में केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ को 14 रनों से हराया। एमडीयू के राज को ऑल राउंडर प्रदर्शन के चलते मैन ऑफ द मैच के खिताब से नवाजा गया। लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विवि, हिसार में आयोजित इस प्रतियोगिता में आज एमडीयू एम्पलाइज क्रिकेट टीम के कप्तान नरेंद्र शीलक ने टॉस जीतते हुए पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया। फ्लैट पिच पर पहले बैटिंग करने का एमडीयू का फैसला सही रहा, एमडीयू के ओपनर नरेंद्र शीलक और राज ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए तेज शुरुआत दी, जिसके बाद दीपक कुमार, आनंद प्रजापति और गौरव दुरेजा ने बेहतरीन बल्लेबाजी की और एमडीयू ने 20 ओवर में 200 रन का स्कोर खड़ा किया।

केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ को 14 रन से हराया

खिलाड़ियों ने खेली शानदार पारी

एमडीयू के राज ने 42 गेंदों पर 46, आनंद ने 28 गेंदों पर 43, नरेंद्र शीलक ने 19 गेंदों पर 42, दीपक ने 14 गेंदों पर 34 रनों की शानदार पारी खेली। 201 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ की क्रिकेट टीम 20 ओवर 186 रन ही बना सकी और एमडीयू ने 14 रन से यह मैच अपने नाम किया। टीम की जीत में खिलाड़ी पंकज नैन, रामबीर राणा, राजेश पंवार, ऋषि सैनी, योगेंद्र सिवाच, राजेश शर्मा, परवीन कुमार, महिपाल फौगाट, नन्द किशोर, सुनील कुमार और सुरेन्द्र कुमार का विशेष योगदान रहा।

जीत पर दी बधाई

एमडीयू के डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. एस. सी. मलिक, कुलसचिव डॉ. कृष्णकांत, खेल निदेशक डॉ. शकुंतला बेनीवाल, सहायक निदेशक डॉ. तेजपाल, क्रिकेट कोच मुकेश गोयल, एमडीयू गैर शिक्षक कर्मचारी संघ के अध्यक्ष सुरेश कौशिक, सभी पदाधिकारी समेत अन्य अधिकारियों ने टीम एमडीयू की जीत पर बधाई और शुभकामनाएं दी।

शादी को 5 माह भी नहीं हुए थे पूरे: पति के काम पर जाते ही खुद को कमरे में किया बंद

नवविवाहिता ने लगाया फंदा

आर्य नगर में दर्दनाक घटना, कोलकाता की रहने वाली थी संजीता, जांच में जुटी पुलिस

रोहतक। मौके पर जांच करते एफएसएल टीम डॉ.सरोज दहिया व पुलिस अधिकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शहर में एक नवविवाहिता ने फांसी लगाकर आत्महत्या करने का मामला सामने आया है। घटना आर्य नगर क्षेत्र की है, जहां कोलकाता निवासी 24 वर्षीय संजीता ने अपने कमरे में फांसी लगाकर जीवनलीला समाप्त कर ली। बताया जा रहा है कि घटना के समय उसका पति नजमुद्दीन काम पर गया हुआ था। जानकारी के अनुसार, रोजाना की तरह शनिवार सुबह करीब साढ़े आठ बजे नजमुद्दीन काम पर गया। कुछ देर बाद जब आसपास रहने वाले किरायेदारों ने संजीता के कमरे का दरवाजा खटखटाया तो अंदर से कोई आवाज नहीं आई। दरवाजा बंद होने पर उन्हें शक हुआ और उन्होंने तुरंत नजमुद्दीन को फोन कर बुला लिया।

दरवाजा तोड़कर अंदर घुसा पति, दिखा दर्दनाक मंजर

घर लौटने के बाद जब नजमुद्दीन ने दरवाजा खोलने की कोशिश की तो वह अंदर से बंद मिला। काफी प्रयासों के बाद जब दरवाजा तोड़ा गया, तो अंदर का नजारा देखकर सभी दंग रह गए। संजीता पंखे से फंदा लगाकर लटकी हुई थी। पति ने तुरंत पुलिस को सूचना दी।

जून में हुई थी शादी

पुलिस जांच में सामने आया है कि मृतका संजीता की शादी इसी साल जून में पश्चिम बंगाल के कोलकाता निवासी नजमुद्दीन के साथ हुई थी। शादी के बाद से वह अपने मायके में ही रह रही थी और करीब दो हफ्ते पहले, यानी 24 अक्टूबर को ही पति के साथ रहने के लिए रोहतक आई थी। यहां दोनों आर्य नगर में किराए के मकान में रह रहे थे।

पुलिस और एफएसएल टीम ने जुटाए साक्ष्य

सूचना मिलते ही आर्य नगर थाना पुलिस और एफएसएल टीम मौके पर पहुंची और कमरे की बारीकी से जांच की। टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य एकत्र किए और शव को पोस्टमार्टम के लिए पीजीआई भिजवाया। शव को फिलहाल शवगृह में रखवाया गया है।

मामले की जांच जारी

आर्य नगर थाना प्रभारी विजेंद्र सिंह ने बताया कि मृतका के पति नजमुद्दीन को पूछताछ के लिए थाने बुलाया गया है और उसकी स्टेटमेंट दर्ज की जा रही है। मृतका के परिजन कोलकाता से आ रहे हैं। उनके बयानों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। थाना प्रभारी ने बताया कि फिलहाल पुलिस आत्महत्या के कारणों की जांच कर रही है। शुरुआती जांच में कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है।

सातवीं हरियाणा स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता में किया शानदार प्रदर्शन

अंडर-11 राज्यस्तरीय खेलों में खिलाड़ियों का जलवा, रोहतक बना हरियाणा का खेल केंद्र

- 6000 के लगभग बाल खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम, हर स्पर्धा में झलकी अनुशासन और खेल भावना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शिक्षा विभाग हरियाणा के तत्वावधान में चल रही सातवीं हरियाणा राज्य स्तरीय अंडर-11 वर्ष स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता के तहत आज विभिन्न खेलों की स्पर्धाओं में बाल खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सभी का मन मोह लिया। प्रतियोगिता के अंतर्गत योग, कुश्ती, कबड्डी, खो-खो, जिम्नास्टिक, एथलेटिक्स, आर्चरी सहित अनेक खेलों के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जा रही हैं। मीडिया संयोजक डॉक्टर जनक ने बताया कि विभिन्न प्रतियोगिताओं में जिला स्तरीय स्कूली योग प्रतियोगिता आयु वर्ग अंडर-11 वर्ष लड़कियों और लड़कों की अगस्त्य इंटरनेशनल स्कूल रोहतक में किया जा रहा है, प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए योग के पारंपरिक और कलात्मक आसनों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। बॉक्सनिर्णायक मंडल में भूपेंद्र सिंह, रविंद्र हुड्डा, डॉ. जनक राज, राजेश कुमार, बसंत कुमार, पूनम, सविता देवी, शिवानी, फारुल, राजकुमारी, विनोद कुमार व निधि सहित अन्य निर्णायक उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के अगले चरण में कल सुबह 9 बजे आर्टिस्टिक पेयर एवं रिदमिक पेयर इवेंट का आयोजन किया जाएगा।

ट्रेडिशनल योग इवेंट (लड़कियां)

- प्रज्ञा (गुरुग्राम) – प्रथम
- दीक्षा (झज्जर) – द्वितीय
- सृष्टि (रोहतक) – तृतीय

ट्रेडिशनल योग इवेंट (लड़के)

- आयुष बेरवाल (हिसार) – प्रथम
- कार्तिक (सोनीपत) – द्वितीय
- परम (यमुनानगर) – तृतीय

आर्टिस्टिक सोलो (लड़कियां)

- आसवी (यमुनानगर) – प्रथम
- आराध्या मित्रा (फरीदाबाद) व कशिश (रेवाड़ी) संयुक्त द्वितीय
- पूर्ति (रोहतक) व आकृति (झज्जर) – संयुक्त तृतीय

खो-खो प्रतियोगिता मानव रचना ग्लोबल स्कूल, रोहतक

- लड़कों में हिसार की टीम ने प्रथम, फतेहाबाद ने द्वितीय, और चरखी दादरी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- लड़कियों में रोहतक की टीम प्रथम, फतेहाबाद द्वितीय और झज्जर तृतीय स्थान पर रही।

जिम्नास्टिक प्रतियोगिता-छोटूराम स्टेडियम

7वीं हरियाणा प्राथमिक जिम्नास्टिक प्रतियोगिता (लड़कों की) में 12 जिलों की टीमों ने भाग लिया। टीम प्रतियोगिता में गुरुग्राम ने 146 अंक लेकर प्रथम, रोहतक ने 130.65 अंक लेकर द्वितीय, और अंबाला ने 111.70 अंक लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया। मुख्य अतिथि जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी दिलजीत सिंह ने विजेताओं को ट्रॉफी व पदक प्रदान किए।

एथलेटिक्स प्रतियोगिता (लड़कियां)

100 मीटर : सत्यम (भिवानी) प्रथम, सुनील (फतेहाबाद) द्वितीय, वान्या (जींद) तृतीय
400 मीटर : आस्था (पानीपत) प्रथम, दीक्षा (फतेहाबाद) द्वितीय, इशिका (पानीपत) तृतीय
लॉन्ग जंप : मधु कटारिया (भिवानी) प्रथम, कृतिका (रेवाड़ी) द्वितीय, रूपाली (फतेहाबाद) तृतीय
शॉट पुट : काव्या (सिरसा) प्रथम, कनक (सोनीपत) द्वितीय, आर.वी. सिंह (भिवानी) तृतीय
हाई जंप : माही (गुरुग्राम) प्रथम, अंशप्रीत (कुरुक्षेत्र) द्वितीय, अंशप्रीत कौर (सिरसा) तृतीय
200 मीटर : दीक्षा (सोनीपत) प्रथम, रक्षिता (फरीदाबाद) द्वितीय, दीक्षा (फतेहाबाद) तृतीय

एथलेटिक्स प्रतियोगिता (लड़के)

लॉन्ग जंप : निखिल (भिवानी) प्रथम, अरुण प्रताप सिंह (गुरुग्राम) द्वितीय, लक्ष्य नारा (हिसार) तृतीय
शॉट पुट : सागर (फतेहाबाद) प्रथम, सूर्य सिंह यादव (अंबाला) द्वितीय, विवेक कुमार (यमुनानगर) तृतीय
हाई जंप : अभिषेक (सिरसा) प्रथम, आर्यन (करनाल) द्वितीय, मोहित कुमार (कैथल) तृतीय
100 मीटर : निखिल (भिवानी) प्रथम, प्रीत सिंह (कैथल) द्वितीय, सूर्य सिंह यादव (अंबाला) तृतीय
400 मीटर : दीपेश (रोहतक) प्रथम, मयंक (हिसार) द्वितीय, युग (सोनीपत) तृतीय
200 मीटर : अरुण प्रताप सिंह (गुरुग्राम) प्रथम, लक्ष्य नारा (हिसार) द्वितीय, सूर्य सिंह यादव (अंबाला) तृतीय

कुश्ती प्रतियोगिता-छोटूराम स्टेडियम

20 किलोग्राम वर्ग: हरीश (सिरसा) प्रथम, साकिब द्वितीय, दिव्यांश (कुरुक्षेत्र) तृतीय
22 किलोग्राम वर्ग: शुभम (फतेहाबाद) प्रथम, अक्षत (हिसार) द्वितीय, नवजोत (कैथल) तृतीय
28 किलोग्राम वर्ग: नितिन (रोहतक) प्रथम, नूरिन (फतेहाबाद) द्वितीय, मनन (जींद) तृतीय
30 किलोग्राम वर्ग: लविश (भिवानी) प्रथम, चैतन्य (सोनीपत) द्वितीय, कुशाल (चरखी दादरी) तृतीय
32 किलोग्राम वर्ग: विराट शर्मा (भिवानी) प्रथम, दीपांशु (पानीपत) द्वितीय, निर्भर (झज्जर) तृतीय
34 किलोग्राम से अधिक वर्ग: रवि (रोहतक) प्रथम, पूर्व (झज्जर) द्वितीय, प्रतीक (कैथल) तृतीय

एचएसईबी वर्कर्स यूनियन की बैठक में ट्रांसफर पॉलिसी और वेतन वृद्धि रोकने पर विरोध तेज

रोहतक। एचएसईबी वर्कर्स यूनियन की कार्यकारिणी बैठक शुक्रवार को विद्युत सदन में हुई। बैठक की अध्यक्षता उप महासचिव विजय हुड्डा ने की। बैठक में ऑनलाइन ट्रांसफर पॉलिसी और असिस्टेंट लाइनमैन व शिफ्ट अटेंडेंट की वार्षिक वेतन वृद्धि रोके जाने के निर्णय का कड़ा विरोध किया गया। विजय हुड्डा ने बताया कि सुपरिंटेंडेंट इंजीनियर (मानव संसाधन) द्वारा कर्मचारियों की इंक्रीमेंट रोकना नियमों के विपरीत है। यूनियन इसका विरोध करेगी और आवश्यक कदम उठाएगी। बैठक में यह भी चर्चा हुई कि संध्या कंपनी के माध्यम से सिटी सबडिवीजन नंबर-1 और नंबर-2 रोहतक में कार्यरत 123 कर्मचारियों का आज रात कंपनी का टेंडर समाप्त हो रहा है, जिससे उनके रोजगार पर संकट मंडरा रहा है। यूनियन ने मांग की कि इन कर्मचारियों को नौकरी पर रखा जाए ताकि उपभोक्ताओं को बेहतर सुविधा मिल सके और विभाग पर वित्तीय भार भी कम हो।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
ऑफिस नं.: 9253681019-20,
फोन : 9253681010, 9253681005

भाजपा नेताओं ने सांपला अनाज मंडी में धान खरीद का लिया जायजा

रोहतक। भाजपा नेताओं ने सांपला अनाज मंडी का दौरा कर किसानों से मुलाकात की तथा धान खरीद का जायजा लिया। अनाज मंडी में उपस्थित किसानों से बातचीत के दौरान सदस्य जिला ग्रीवांस कमेटी डॉ अशोक कुमार रंगा ने जानकारी लेते हुए कहा कि किसान और व्यापारी को ध्यान में रखते हुए सरकार हर सम्भव कार्य कर रही है ताकि फसल की समय सीमा में बिक्री सुनिश्चित हो सके। डॉ रंगा ने उपस्थित किसानों की कुछ समस्याओं को लेकर तुरंत संज्ञान लेते हुए समुचित समाधान हेतु सांपला के अधिकारियों से विचार विमर्श किया तथा भविष्य में किसानों को कोई असुविधा न हो इसका भी ध्यान रखने का अनुरोध किया। भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष राजकुमार शर्मा ने कहा कि किसानों और व्यापारियों में तालमेल तथा किसानों को पूरा भाव मिले इस बात पर सरकार काम कर रही है और हर विषय पर नजर बनाए हुए है। भाजपा जिला कार्यालय सचिव बीर सिंह हुड्डा ने धान की ढेरियां पर पहुंच कर खरीद मूल्य, गेट पास की जानकारी ली तथा उपस्थित किसानों व अधिकारियों से धान व बाजरे की खरीदारी का पूरा ब्यौरा लिया। भाजपा सांपला मंडल अध्यक्ष कपिल खत्री ने किसानों से बातचीत में कहा कि सरकार धान की खरीदारी में पारदर्शिता सुनिश्चित कर दाना दाना खरीद रही है। इस दौरान सांपला के नायब तहसीलदार, मंडल महामंत्री राज सिंह अम्बेडकर, मनीष कौशिक, प्रदीप डागर , मंडी स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

आर्य समाज मंदिर महाशय धर्मचंद गांधी यज्ञशाला का सातवां वार्षिकोत्सव आज

रोहतक। मानसरोवर कॉलोनी स्थित आर्य समाज मंदिर महाशय धर्मचंद गांधी यज्ञशाला का सातवां वार्षिकोत्सव शुक्रवार को कॉलोनी के चौधरी बक्सा राम स्मृति पार्क में बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा। इस वार्षिक उत्सव में धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की जा रही है, जिनमें श्रद्धालुओं के उत्साह का माहौल देखने को मिलेगा। कार्यक्रम की शुरुआत 11 कुंडीय गायत्री महायज्ञ से होगी, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालु भाग लेंगे। इसके बाद भजन-प्रवचन और सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में एक्शन इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली के मालिक नंदकिशोर अग्रवाल, डीएवी संस्था के उपप्रधान रमेश कुमार आर्य, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के सह मंत्री सतपाल आर्य तथा चंडीगढ़ के समाजसेवी सुशील भाटिया शामिल होंगे।

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में कानूनी जागरूकता पर विशेष व्याख्यान आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय रोहतक के विधि विभाग के कानूनी सहायता क्लब की ओर से राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस के अवसर पर कानूनी जागरूकता विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए), रोहतक, हरियाणा के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रमिला, सहायक प्रोफेसर, ने संयोजक के रूप में किया, जबकि डॉ. सीमा देवी, एसोसिएट प्रोफेसर, सह-संयोजक रहीं। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में रोहित कुमार मुदगिल, पैनल अधिवक्ता, डीएलएसए रोहतक उपस्थित रहे। मुदगिल ने भारत में कानूनी सहायता आंदोलन के विकास पर विस्तार से प्रकाश डाला। विभाग के डीन डॉ. मनीष दलाल और डिप्टी डीन डॉ. रितु ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस 2025 समाज को यह याद दिलाता है कि न्याय केवल न्यायपालिका का नहीं, बल्कि हर विधिक पेशेवर और छात्र का भी दायित्व है।

विद्यार्थियों ने विशेषज्ञ से मार्गदर्शन प्राप्त किया

इस अवसर पर साहिल (अधिकार मित्र, डीएलएसए रोहतक), हर्ष और शुभम (कानूनी सहायता क्लब सदस्य) सहित डॉ. राजरानी, डॉ. नेहा, डॉ. सोनिया, डॉ. विनती, राहुल और आकाशदीप उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन प्रश्नोत्तर सत्र के साथ हुआ, जिसमें विद्यार्थियों ने कानूनी सहायता से जुड़ी जिज्ञासाओं पर प्रश्न पूछे और विशेषज्ञ से मार्गदर्शन प्राप्त किया। यह आयोजन न केवल विधिक शिक्षा की दिशा में एक सार्थक कदम था, बल्कि न्यायिक प्रणाली को समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने की भावना को भी प्रबल करने वाला रहा।

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
सिटी कार्यालय :- हरिभूमि, कृषि विज्ञान केन्द्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9996959400
मुख्य कार्यालय :- हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20

कार्यक्रम | एमडीयू में दो दिवसीय हरियाणा इतिहास कांग्रेस के दसवें अधिवेशन का शुभारंभ

प्रगति के दिशा निर्देशक की भूमिका निभाता इतिहास : मलिक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में शनिवार को इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के तत्वावधान में दो दिवसीय हरियाणा इतिहास कांग्रेस के दसवें अधिवेशन का शुभारंभ हुआ। इस अधिवेशन में प्रो. जयवीर एस. धनखड़ द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। इस अधिवेशन के मुख्य अतिथि प्रो. एससी मलिक डीन, एकेडमिक अफेयर, महर्षि दयानन्द विश्विद्यालय ने अधिवेशन के महत्व को बताते हुए यह बताया कि इतिहास प्रगति के दिशा निर्देशक की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए हरियाणा इतिहास कांग्रेस के जनरल अध्यक्ष तथा इंडियन काउंसिल ऑफ़ हिस्टोरिकल रिसर्च (आईसीएचआर), नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. रघुवेन्द्र तंवर ने हरियाणा को सभ्यता की जननी बताते हुए इसके मूल्यों के संरक्षण पर बल दिया।

रोहतक। आयोजित कार्यक्रम में पुस्तक का विमोचन करते मुख्य अतिथि प्रो. एससी मलिक डीन, एकेडमिक अफेयर,मदवि,आईसीएचआर नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. रघुवेन्द्र तंवर व हैदराबाद विश्विद्यालय के प्रो. संजय सुबोध ।

सिंधु घाटी सभ्यता के जल प्रबंधन के बारे बताया

प्राचीन अनुभागीय अध्यक्ष व पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. संजय कुमार मंजुल के द्वारा सिंधु घाटी सभ्यता के जल प्रबंधन विशेषकर राखीगढ़ी (हरियाणा) पर विस्तार से बताया गया। मध्यकालीन अनुभागीय अध्यक्ष हैदराबाद विश्विद्यालय के प्रो. संजय सुबोध द्वारा हरियाणा के मध्यकालीन इतिहास पर प्रकाश डाला गया। आधुनिक अनुभागीय अध्यक्ष इंदिरा गाँधी मुक्त विश्विद्यालय इग्नू से सेवानिवृत प्रो. स्वराज बसु ने हरियाणा की सांस्कृतिक निरंतरता और आधुनिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। हरियाणा इतिहास कांग्रेस के अध्यक्ष प्रो. यशवीर सिंह ने अपने स्वागत वक्तव्य के साथ हरियाणा इतिहास कांग्रेस की स्थापना तथा इसके महत्त्व के बारे में बताया। हरियाणा इतिहास कांग्रेस के महासचिव डॉ. सज्जन कुमार जो हरियाणा इतिहास कांग्रेस के प्रोसीडिंग्स के मुख्य संपादक भी हैं, उन्होंने प्रोसीडिंग्स के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि जो शोध पत्र प्रोसीडिंग्स में प्रकाशित होते हैं, वे हरियाणा की संस्कृति और इतिहास को राष्ट्रीय एवं वैश्विक पटल पर लाने में सहायक होते हैं।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर सह -संयोजक डॉ. अनिल यादव, स्थानीय आयोजन सचिव डॉ. विकास पवार के अतिरिक्त संयुक्त सचिव डॉ. विजय कुमार, सह संपादक विकास गुप्ता तथा हरियाणा इतिहास कांग्रेस की कार्यकारिणी परिषद के सदस्य डॉ. सुखवीर सिंह, डॉ. सुरुचि शर्मा, डॉ. जगदीश प्रसाद, डॉ. अर्चना मलिक, डॉ. उमा शंकर सिंह, डॉ. अजय कुमार एवं डॉ. नीना कुमारी सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।
इस अधिवेशन में हरियाणा सहित भारत के लगभग 17 राज्यों के शोधार्थी अपने शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए शामिल हो रहे हैं और लगभग 250 प्रतिभागियों की सक्रिय प्रतिभागिता रही. सत्र का कुशल मंच संचालन डॉ. वंदना ने किया।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक रविवार 9 नवंबर 2025

हम सब जानते हैं कि देश-समाज का भविष्य हमारे नौनिहालों के हाथों में है। इसलिए उनके लालन-पालन से लेकर उनके समग्र विकास पर बहुत ध्यान देने की जरूरत होती है। नए दौर में बच्चों के सामने कैसी चुनौतियां हैं, उन्हें किन स्तरों पर संघर्ष करना पड़ रहा है, इसे हमें समझना होगा। तभी उनका बचपन सुरक्षित होगा और उनके साथ देश-समाज का भविष्य भी बेहतर बन सकेगा।

हमारी सजगता से बच्चों को मिलेगा
सुरक्षित बचपन-बेहतर भविष्य

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

हर साल 14 नवंबर को पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस पर भारत में बाल दिवस मनाया जाता है, जिसका पारंपरिक अर्थ रहा है- बच्चों की मासूमियत और जिज्ञासा को सहेजना। लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि जब से बाल दिवस शुरू हुआ था, तब से अब तक इसके भावनात्मक अर्थ पूरी तरह से बदल चुके हैं। कभी यह बच्चों को टॉफी देने, उनसे कार्यक्रम करवाने और स्टेज से उन्हें अच्छी-अच्छी बातें सुनाने का दिन हुआ करता था। लेकिन 21वीं सदी के इस 25वें साल में बाल दिवस का मतलब हर बच्चे को डिजिटल, मानसिक और पर्यावरणीय रूप से सुरक्षित बचपन देना है।

बदल गए बाल दिवस के मायने

आज बच्चों से मुखातिब होने का मतलब उन्हें केवल शिक्षा और पोषण तक सीमित रखना नहीं है बल्कि आज के बच्चों का एक्सपोजर- एआई, सोशल मीडिया, मोबाइल एडिक्शन, जलवायु संकट और करियर को लेकर तरह-तरह के दबावों से घिरा हुआ है। आज बचपन के चारों तरफ नई-नई चुनौतियां हैं, जिन्हें शायद आज के चार दशक पहले के बच्चे जानते तक नहीं थे। इसलिए साल 2025 में बाल दिवस का वही मतलब नहीं है, जो 1970 या 80 में हुआ करता था। आज बाल दिवस का मतलब बच्चों को सुरक्षित, स्वतंत्र और खुशहाल इंसान बनाने का सपना ही नहीं बल्कि उन्हें उचित अवसर देना भी है। इसलिए आज यह दिन बच्चों को याद करने का नहीं, उनकी दुनिया को बेहतर बनाने का दिन है। आज यह दिन हममें उनके भविष्य के निर्माण के प्रति चिंता पैदा करता है। नई सदी की नई चुनौतियों के अनुरूप आज बच्चों के बचपन को संजोने से आगे बढ़कर उन्हें भविष्य के अनुरूप इंसान गढ़ने का दिन है।

कई दबावों से घिरा है बचपन

पंडित नेहरू बच्चों को देश का भविष्य मानते थे। उनका सोचना था कि अगर बच्चों को सही दिशा में सोचने, सवाल करने और सीखने की आजादी मिले तो वे आपकी कल्पना से भी ऊंची उड़ान भर सकते हैं। लेकिन हमने आजादी के बाद के पिछले 80 सालों में बचपन को फलने-फूलने के लिए एक खुला वातावरण देने की बजाय आज के बच्चों को प्रेशर कुकर पीढ़ी बना दिया। आज दस साल का बच्चा भी अपने करियर की उस तरह चिंता करता है, जैसी चिंता आजादी के तुरंत बाद के दिनों में 40 साल के अधेड़ भी नहीं करते थे। उस जमाने में बचपन का मतलब होता था- खेलना, बेफिक्र होकर जीना और जीवन की असफलताओं से गुजरकर सफलता की ओर बढ़ना। लेकिन आज स्थिति एकदम बदल गई है। ऐसा माहौल बन गया है जैसे आज जीवन में असफलता के लिए कोई जगह ही नहीं है। आज की तारीख में दस-बारह साल के बच्चे एक नहीं कई-कई क्षेत्रों में पारंगत बनने के लिए वैसी गंभीर ट्रेनिंग लेते हुए मिल जाएंगे, जैसे कभी वयस्क लिया करते थे।

बच्चों के बीच न पनपे असमानता

डिजिटल युग में बचपन की बाधाएं बिल्कुल अलग हैं। आज 27 करोड़ बच्चे इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। अब किताबों से पहले उनके हाथ में स्मार्ट मोबाइल होते हैं, जबकि दूसरी तरफ बड़ी संख्या में ऐसे भी बच्चे हैं, जिन्हें जीवन की बुनियादी सुविधाएं भी हासिल नहीं हैं। ऐसे में भला देश के सभी बच्चे एक तरह से कैसे आगे बढ़ सकते हैं? यहां स्मार्ट फोन रखने वाले बच्चे ऑनलाइन शिक्षा, कोडिंग, डिजाइन और उद्यमिता के भविष्य का पाठ अपनी स्कूल की पढ़ाई के दौरान ही पढ़ना शुरू कर देते हैं, वहीं करोड़ों गांवों, कस्बों के बच्चों के लिए ये पाठ उनकी जिंदगी शुरू हो जाने के बाद भी मुश्किल से शुरू हो पाता है। इसलिए जरूरी है कि किसी भी तरह से व्यवस्था करके भारत में बच्चों के बीच असमानता की इस बड़ी खाई को पाटना होगा। आज बड़े पैमाने पर नई पीढ़ी को यह समझाने की जरूरत है कि अब डिजिटल साक्षरता केवल तकनीकी नहीं बल्कि उस मोड़ पर आ गई है, जहां इसे नैतिक शिक्षा का भी हिस्सा बनना चाहिए। बच्चों को आज यह बताना जरूरी है कि डिजिटल माध्यम उनके अच्छे भविष्य को संवारने का साधन मात्र है, साध्य नहीं।

भविष्य के लिए करना होगा तैयार

आज बाल दिवस के मौके पर हम बच्चों को कोई चीज समझाने के लिए रटाने की जिद नहीं कर सकते बल्कि उन्हें समस्या का हल निकालने का मैथड समझाना होगा, साथ ही नैतिक निर्णय लेने की क्षमता भी उनमें भरनी होगी, ताकि वह भविष्य में सिर्फ रोजगार के क्षेत्र में ही सफल न हों बल्कि जीवन जीने के मामले में भी बेहद कामयाब हो सकें। आज बच्चों में पर्यावरणीय चेतना जगाना एक्स्ट्रा एक्टिविटी नहीं, न उनको विशेष बनाना है बल्कि यह जीने की जरूरी गतिविधि का हिस्सा है।

इसी तरह बच्चों में समानता और समावेशिता की सीख देना सिर्फ उन्हें बेहतर इंसान बनाने की कोशिश नहीं है बल्कि उन्हें आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में योग्य बने रहने का जरूरी गुण है और याद रखिए, आज के बच्चों को न तो पूरी तरह से घर की जिम्मेदारी पर छोड़ा जा सकता है और न ही मां-बाप उन्हें बेहतर इंसान और सफल नागरिक बनाने की सारी जिम्मेदारी स्कूलों पर डाल सकते हैं। यह स्कूलों और घरों के साझे अभियान का समय है। अगर हम बच्चों को भविष्य का सफल और शिष्ट नागरिक बनाना चाहते हैं, तो उन्हें आगामी चुनौतियों के लिए तैयार करना होगा। तभी बाल दिवस मनाना भी सफल होगा। *

बच्चों के तनाव को करें दूर

साल 2024 के एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण के मुताबिक आज हर सात में से एक बच्चा किसी न किसी तरह के मानसिक तनाव से गुजर रहा है। मोबाइल युग के पहले ऐसा खतरा दूर-दूर तक नहीं होता था। आज बच्चों के सामने परीक्षा का डर, सोशल मीडिया की चिंता और माता-पिता की उम्मीदों की धुकधुकी उन्हें सहज नहीं होने देती। अगर हम बच्चों को भविष्य का स्वस्थ और सफल इंसान बनाना चाहते हैं, तो हमें उनके स्वास्थ्य को लेकर सहानुभूति से सुनने की सोच बदलनी होगी। स्कूलों में काउंसलिंग सेल, ओपन टॉक सेशन और इमोशनल लिट्रेसी प्रोग्राम लागू करने की बेहद जरूरत आन पड़ी है। आज बाल दिवस बड़ी शिद्दत से हमें याद दिलाता है कि बच्चों में भावनात्मक मजबूती, उनके सफल होने की बुनियादी शर्त है। साथ ही आज बदलते युग की जरूरतों में किसी न किसी कुशलता में दक्ष होना और अपनी गतिविधियों में वैल्यू एडिशन करने की क्षमता पाना भी जरूरी है। यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि साल 2030 के बाद मशीनें सिर्फ मशीनें नहीं रहेंगी, वह इंसान से भौतिक प्रतिस्पर्धा करती नजर आएंगी। आने वाले दिनों में परंपरागत नौकरियां बदल जाएंगी। इसलिए आज की पीढ़ी को सीखना ही नहीं बहुत सतर्कता और सावधानी से अपनी क्रिएटिविटी और कोलेबरेशन की क्षमता को भी साथ-साथ बढ़ाना है।

विशेष: बाल दिवस
14 नवंबर

दायित्व
डॉ.अनिता राठौर

पैरेंट्स-टीचर्स जरूर समझें
बच्चों की जरूरतें-समस्याएं

हर साल मनाए जाने वाले बाल दिवस का आशय हमें इस बात का एहसास भी कराना है कि कैसे आने वाले समय में बच्चे अपनी कल्पना, मासूमियत और संवेदनशीलता को बरकरार रखते हुए आगे बढ़ सकें? लेकिन सवाल है क्या आज अभिभावक और अध्यापक सचमुच बच्चों के रोजमर्रा की जरूरतों को समझते हैं? क्या तकनीक के बदलाव के इस दौर के बच्चों की जुबान और उनके मन पर तेजी से पड़ रहे प्रभावों को वो समय के अनुरूप समझ पा रहे हैं और इसको ध्यान में रखते हुए उनके विकास की जरूरत की भाषा बोल-समझ पा रहे हैं?

बदलें अपनी मानसिकता: जिस तरह से इंटरनेट, सोशल मीडिया, स्मार्ट क्लास, डिजिटल गेम्स और जूम्स गैदरिंग ने आज की समूची जीवनशैली को बदलकर रख दिया है, उस जीवनशैली को आज की एक दशक पुरानी भाषा से न तो समझा जा सकता है और न ही व्यक्त किया जा सकता है। लेकिन सवाल है, क्या आज भी कई दशक पुराने अध्यापक जो हमारी शिक्षा व्यवस्था की बागडोर अपने हाथों से संभाले हुए हैं, उन्हें डिजिटल युग के इन बच्चों की अभिव्यक्ति की भाषा समझ में आती है? क्या वे उन्हें उनके अनुरूप भाषा में जवाब दे पा रहे हैं? यह सिर्फ अध्यापकों के समक्ष का सवाल नहीं है। सच तो यह है कि यह बात अभिभावकों पर भी पूरी तरह से लागू होती है। आज के बच्चों का बचपन सिर्फ खेल के मैदान में नहीं बल्कि खेल के मैदान में कम, स्क्रीन की रोशनी के बीच ज्यादा बीतता है। लेकिन उनके अधिकांश अभिभावक साथ ही अध्यापक भी आज भी 90 के दशक की उस मानसिकता में अटके हुए हैं, जहां बच्चों से उम्मीद की जाती है कि वे किताबों में डूबे रहें, अपनी क्लास में सबसे ज्यादा नंबर लाएं, बड़ों की बातों को बिना सवाल किए मानें और घर में जब रिश्तेदार आएं तो उनके सामने वे अपने मां-बाप और रिश्तेदारों द्वारा पूछे गए हर सवाल का जवाब गर्दन नीची करके दें।

बदल गई बच्चों की मनःस्थिति: आज के बच्चों की मनःस्थिति बिल्कुल बदल गई है। सच तो यह है कि आज के तेज रफ्तार विकास और चमत्कारिक हो चली तकनीकी के इस युग में उनके मनो-मस्तिष्क में जिज्ञासाओं और आशंकाओं की तेज रफ्तार के अंधड़ चल रहे हैं। फिर भी अभिभावक हों या अध्यापक, उनसे 90 के दशक के बच्चों की तरह ही अनुशासन और आज्ञाकारिता की मांग करते हैं। मां-बाप और स्कूल टीचर बच्चों को आज भी पुराने खांचे और सांचे में ढाले रखना चाहते हैं। आज के मां-बाप और अध्यापक इस बात को समझ ही नहीं रहे कि तेजी से आ धमके डिजिटल युग ने किशोरों की समूची मानसिक संरचना को बदल कर रख दिया है। आज 14 से 16 साल के बच्चे न सिर्फ भविष्य के अपने करियर को लेकर चिंतित हैं बल्कि अपने लाइफस्टाइल को लेकर भी उन पर अभी से दबाव है।

आज के बच्चे 'डिजिटल नेटिव्स' हैं यानी, ऐसी पीढ़ी जो तकनीक के साथ पैदा हुई है और समझती है कि उन्हें डांटने और रोकने की इजाजत भी मां-बाप के पास नहीं होनी चाहिए।

समझें नए दौर के बच्चों की जरूरतें: एक बड़ी समस्या यह भी है कि आज अभिभावक अपने बच्चों की ज्यादातर जरूरतों को भौतिक रूप ही समझते हैं। जैसे- उनका स्कूल अच्छा होना चाहिए, उनके पास अच्छी क्वालिटी का मोबाइल होना चाहिए, वो प्रतिष्ठित कोचिंग सेंटर या ट्यूटर से कोचिंग पढ़ें और उनके कपड़े अच्छे से प्रेस (इस्त्री) होने चाहिए। मां-बाप भूल जाते हैं कि बच्चों की इन सब चीजों के अलावा भी जरूरतें हैं। उनकी भावनात्मक और मानसिक जरूरतें। लेकिन यह सिर्फ मां-बाप की ही कहानी नहीं है, आज के अध्यापक भी भूल जाते हैं कि उनके छात्र, उनसे टेक्नोलॉजी में कुशलता के अलावा जीवन की कठिन गांठों को सुलझाने की उम्मीद भी रखते हैं। आज के किशोरों के दिल की बात सुनने वाला कोई नहीं है, न स्कूल में अध्यापक, न घर में मां-बाप।

जी लेने दें बच्चों को बचपन: आज अभिभावकों और अध्यापकों को ठहरकर इन बातों पर गौर करना चाहिए। ऐसे संक्रमण काल में यह जरूरी है कि अध्यापक और अभिभावक दोनों ही बच्चों के दिल की आवाज को गंभीरता से सुनें। आज भी बच्चों को उनकी रुचियों के मुताबिक जीने और बचपने का आनंद लेने की छूट दी जानी चाहिए, जिसके लिए जरूरी है कि अभिभावक और अध्यापक दोनों ही आज के बचपने की भाषा को गंभीरता से समझें, तभी इस सब कुछ की संभावना वाले युग में बच्चों का बचपन शानदार और खुशियों से भरा होगा। *

गजल
प्रताप सोमवंशी

वो सारा दर्द छुप जाता था जो घर-बार के अंदर
वही दिखने लगा है आज-कल अखबार के अंदर

वो घर के एक बूढ़े की तरह सबसे निभाता है
मुसीबत छह दिनों की छुप गई इतवार के अंदर

ये रिश्ते तौलना, गिनना, उठाना, देखना, रखना
ये हम परिवार के अंदर हैं या बाजार के अंदर

वहां रिश्तों की खिड़की पर है कितने कीमती पर्दे
घुटन महसूस होती है मुझे दीवार के अंदर

किसी को भी कभी शीशे के जैसे मत समझ लेना
बहुत चुभता है जब टूटा है कुछ किरदार के अंदर

भलाई सिर्फ इतना चाहती है सौंपकर सबकुछ
बदल जाए कहीं दुनिया में कुछ दो-चार के अंदर

बहुत मजबूत होते हैं ये मजबूरी के कांधे भी
जो पूरा गांव ढो कर रख गए बाजार के अंदर

व्यंग्य / विनय मोघे

मोबाइल का बवाल

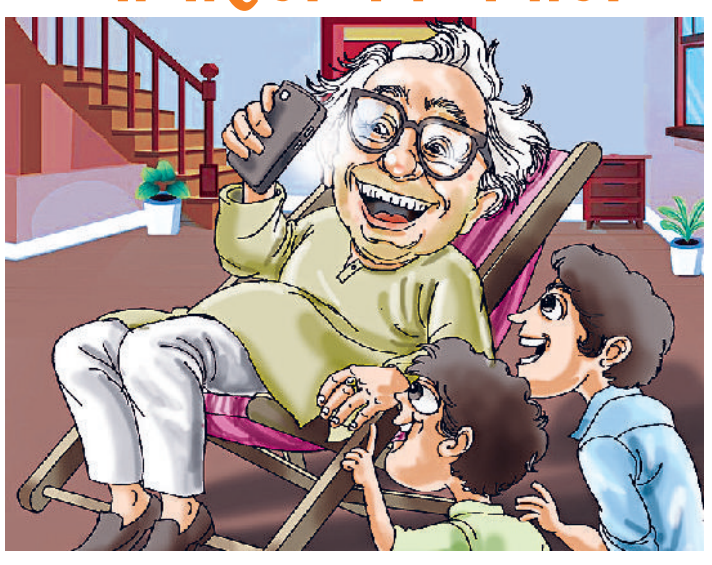

सत्तर वर्षीय ख्यालीराम का परिवार चिंतित है, क्योंकि ख्यालीराम ने अन्न-जल त्याग देने की घोषणा कर दी है। कारण यह है कि घरवालों ने उनका मोबाइल उनसे ले लिया है। अब उनका फेसबुक, व्हाट्सएप सब बंद है। दुनिया से उनका संपर्क टूट गया है, इसीलिए उन्होंने अन्न-जल से अपना, संपर्क तोड़ लेने की ठान ली है।

दरअसल, कुछ महीने पहले ही उनके बेटे ने उनके जन्मदिन पर उन्हें अच्छा वाला स्मार्टफोन दिलाया था। उनके पौत्रों ने उनके मोबाइल पर कई सारे एप्स डाउनलोड कर दिए थे। ख्यालीराम की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कांपते हाथों और कमजोर नजरों से ख्यालीराम उन एप्स का उपयोग करने लगे। बस यहीं से उनकी और उनके परिवार की परेशानी का सिलसिला शुरू हो गया।

पिछले दिनों जब एक दूर के रिश्तेदार की मृत्यु का समाचार व्हाट्सएप पर आया तो उनके कांपते हाथों ने फूल की जगह तालियों के साथ बहुत बढ़िया प्रकट करने वाला इमोजी भेज दिया। साथ ही में RIP की जगह दो बार PIP-PIP भी लिख दिया। उनकी इस गलती पर ग्रुप के बाकी लोग बहुत नाराज हुए थे। हर बर्थ-डे और एनिवर्सरी पर सेम गलती करते या उनसे कोई और गलती हो जाती है। केक के चित्र की जगह या तो दूध की बोतल वाला चित्र भेज देते या कुत्ते को दी जाने वाली हड्डी का। बधाई संदेशों को खुद टाइप नहीं कर पाते तो कॉपी पेस्ट कर दिया करते। ऐसे में कभी एनिवर्सरी के उनके संदेश में अकसर पति-पत्नी की जोड़ी बदल जाती थी। पतियों को शायद उनका ऐसा करना अच्छा लगता हो पर पत्नियां नाराज हो उठती थीं। उनकी गलतियों से बचने के लिए उनके दोनों पौत्रों ने उन्हें वॉइस मैसेज भेजने का आइडिया सुझाया। एक बर्थ-डे पर उन्होंने जो वॉइस मैसेज भेजा, जिसमें सिर्फ उनके खांसने की आवाज और दो बार 'हे राम, ये खांसी तो मार ही डालेगी मुझे।' सुनाई दिया। पूरे मैसेज में बर्थ-डे का जिक्र कहीं नहीं हुआ।

फेसबुक पर अपने पुराने मित्रों, सहेलियों को ढूंढने के चक्कर में उनके नाम से मिलते-जुलते नाम वाले कई लोगों को अपना मित्र बना लिया था। कुछ ही दिनों में उनके मित्रों की कुल संख्या सैकड़ा पार कर गई थी, जिनमें असली मित्र बहुत ही कम थे। कांपते हाथों और कमजोर नजरों के कारण उनके फेसबुक मित्रों की संख्या में बेतहाशा बढ़ोतरी हो रही थी। एक दिन किसी ऑनलाइन शॉपिंग एप पर उनके कांपते हाथों और कमजोर नजरों के कारण 43 इंच एलईडी टीवी ऑर्डर हो गया, वो भी 'कैश ऑन डिलीवरी।' जिस दिन यह घटना हुई, उसी दिन घरवालों ने उनसे मोबाइल वापस ले लिया। मोबाइल के आदी हो चुके ख्यालीराम अब अन्न-जल के बिना रह सकते हैं पर मोबाइल के बिना नहीं। घरवाले सोच रहे हैं, उन्हें अन्न-जल दें या मोबाइल? *

पिछले दिनों जब एक दूर के रिश्तेदार की मृत्यु का समाचार व्हाट्सएप पर आया तो ख्यालीराम के कांपते हाथों ने फूल की जगह तालियों के साथ बहुत बढ़िया प्रकट करने वाला इमोजी भेज दिया। उनकी इस गलती पर ग्रुप के बाकी लोग बहुत नाराज हुए।

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

जीने का रास्ता दिखाती कहानियां

समय के साथ बहुत कुछ बदल गया है। इस बदलाव की सबसे बड़ी मार परिवार, रिश्ते, नाते और हमारी संवेदनाओं पर पड़ी है। हर किसी की जिंदगी में हर दिन कुछ ना कुछ टूट रहा है, बिखर रहा है। तकनीक की तरक्की ने दूरियों को और बढ़ाने का काम किया है। इन्हीं दूरियों, बिखराव और भटकाव के बीच जीने का रास्ता तलाशती हैं 'पा की डायरी' की कहानियां। इस पुस्तक की लेखिका आशा शर्मा हैं। लेखिका अपनी इन कहानियों में एक स्वप्न बुनती हैं। स्वप्न जिसमें परिवार का साथ, रिश्तों में नमी व स्त्री की स्वतंत्रता हो। शीर्षक कहानी 'पा की डायरी' दांपत्य प्रेम की अनूठी बानगी है। एक डायरी जो जीवन भर पत्नी को परेशान करती रही। पति के मृत्यु के बाद उसका रहस्य खुलता है, जो पत्नी को हैरान कर देता है। 'दिमाग वाली लड़की' आज की आत्मचेता स्त्री के स्वाभिमान की कहानी है। 'अधबुना स्वेटर' में लेखिका ने रिश्तों की गर्माहट की बड़ी आत्मीय कहानी लिखी है। 'प्रतिरूप', 'पिघलती बर्फ', 'जी ले जरा' आदि कहानियां भी जीवन के उतार-चढ़ाव को खूबसूरती से उकेरती हैं। कह सकते हैं कि ये आज के जटिल समय की कहानियां हैं। मगर लेखिका ने इसे बड़े सरल तरीके से लिखा है। बिल्कुल सुलझे अंदाज में। *

पुस्तक: पा की डायरी (कहानी संग्रह),
लेखिका: आशा शर्मा, **मूल्य:** 260 रुपए,
प्रकाशक: समृद्ध पब्लिकेशन, दिल्ली

एआई इमेज

लघुकथा / बालकृष्ण गुप्ता 'गुरु'

बड़ा आदमी

सुभाष के बारह वर्षीय बेटे राहुल ने मचलते हुए कहा, 'पापा, मुझे बड़ा आदमी बनना है।'

'इस सीढ़ी पर चढ़कर बैठ जा।' सुभाष ने दीपावली की सफाई के लिए निकाली गई सीढ़ी की ओर इशारा करते हुए मजाकिया ढंग से कहा।

राहुल भी हंसी-हंसी में सीढ़ी के तीन डंडों पर चढ़कर ऊपर बैठ गया।

पिता ने पहले अपने और फिर उसके सिर पर हाथ ले जाते हुए बताया, 'देखो, अब तुम मुझसे भी बड़े हो गए। ध्यान दो, तुम एक-एक सीढ़ी चढ़ते हुए बड़े बने हो।'

राहुल ने शिकायती लहजे में कहा, 'ऐसे नहीं, मुझे सचमुच का बड़ा आदमी बनना है।'

'इसके लिए तुम्हें अपने ही आस-पास के किसी बड़े आदमी को ढूंढना होगा, उसके समीप रहना होगा और फिर उसके जैसा बनने की कोशिश भी करनी होगी।'

राहुल ने सवाल किया, 'लेकिन कोई बड़ा आदमी है, मैं कैसे पहचानूंगा?'

'हां, यह समस्या तो है। पहले के समय में पहचान का तरीका अलग था। कोई सज्जन होता था, ज्ञानी होता था, समाज के हित के लिए काम करता था तो उसे बड़ा आदमी माना जाता था। आज के जमाने में किसी व्यक्ति के आस-पास के लोगों को व्यवहार देखकर यह जाना जाता है।' सुभाष ने बताया।

'उस व्यक्ति के बजाय उसके आस-पास के लोगों का व्यवहार देखकर पहचाना जाएगा कि वह कितना बड़ा आदमी है?' राहुल ने आश्चर्य से पूछा।

'हां!' पिता सुभाष ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, 'कोई आदमी कहीं पहुंचे तो उसे आता देखकर वहां बैठे सारे लोग खड़े हो जाएं, वह आकर बैठ जाए तो सभी बैठ जाएं, वह आदमी चलने के लिए उठकर खड़ा हो तो शेष लोग भी खड़े हो जाएं, उसे छोड़ने बाहर तक जाएं, तब समझो कि वह बड़ा आदमी है।' *

सेलिब्रेशन / शिखर चंद जैन

अपने भारत देश में तो बाल दिवस 14 नवंबर को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ प्रत्येक वर्ष 20 नवंबर को बाल दिवस मनाता है। लेकिन दुनिया के तमाम देशों में अलग-अलग महीनों/दिनों में बाल दिवस अनोखे अंदाज में मनाया जाता है। इनमें से कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस, जानिए।

दुनिया भर में मनाते हैं बाल दिवस

बच्चों को पूरी दुनिया में प्यार किया जाता है। यही वजह है कि दूसरे दिवस भले ही दुनिया में हर जगह न मनाए जाते हों लेकिन चिल्ड्रेंस-डे दुनिया के लगभग हर देश में मनाया जाता है। दिलचस्प बात यह है कि साल के हर महीने में कहीं ना कहीं चिल्ड्रेन-डे मनाया जाता है। दुनिया भर में 90 से ज्यादा देशों में बच्चों के सम्मान में एक समर्पित राष्ट्रीय अवकाश है। इस अवकाश को बाल दिवस के नाम से जाना जाता है। आइए जानते हैं, दुनिया के कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस-

कोडोमो नो हि जापान

जापान में, बाल दिवस हर वर्ष 5 मई को मनाया जाता है। सन 1948 से यह राष्ट्रीय अवकाश है। इसे दो त्योहारों के रूप में मनाया जाता था, टैंगो नो सेक्कु (लड़कों का दिन) और हिनामात्सुरी (लड़कियों का दिन)। जापान में बाल दिवस मनाने का सबसे प्रसिद्ध तरीका काबूतो और गोगात्सु-निंग्यो जैसे पारंपरिक आभूषणों को प्रदर्शित करना होता है। काबूतो एक पारंपरिक समुराई हेलमेट है, जो अकसर सबसे सुंदर सजावट के साथ होता है। गोगात्सु-निंग्यो कवच और जापानी तलवार से सुसज्जित जापानी योद्धा गुड़िया का प्रतीक है। लोग उन्हें घर पर प्रदर्शित करते हैं। 'कोडोमो नो हि' यानी बाल दिवस जापान में एक राष्ट्रीय अवकाश है। कोइनोबोरी नामक रंगीन झंडे उत्सव के विशेष प्रतीक हैं, जिन्हें इस दिन घरों के बाहर खंभों पर लटकाए जाते हैं। जापानी में, कोइ का मतलब कार्प होता है। यह एक प्रकार की मछली है, जो शक्ति और दृढ़ता का प्रतीक है और नोबोरी का मतलब है ऊपर उठना। बाल दिवस के अवसर पर टोक्यो के राष्ट्रीय कासुमीगाओका स्टेडियम में बच्चों का ओलंपिक भी आयोजित किया जाता है, जिसमें हजारों बच्चे और उनके अभिभावक दौड़ में भाग लेते हैं।

डिया डेल निनो मेक्सिको

मेक्सिको में बाल दिवस की शुरुआत सन 1925 में हुई थी। इस उत्सव की शुरुआत अल्वारो ओब्रेगॉन के राष्ट्रपति काल के दौरान हुई थी, जब प्रथम विश्व युद्ध से प्रभावित यहां के कमजोर बच्चों के कल्याण की योजनाएं बनाई जा रही थीं। मेक्सिको में बाल दिवस 30 अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिन बच्चे स्कूल जाते हैं, लेकिन रेग्युलर क्लास नहीं चलती। सारा दिन खेल खेलने, पिनाटा बनाने और तोड़ने, संगीत का आनंद लेने और बहुत सी मजेदार एक्टिविटीज करने में व्यतीत होता है। स्कूल के बाद, परिवार अपने बच्चों को संग्रहालयों, सिनेमाघरों और चिड़ियाघरों जैसी जगहों पर घुमाने ले जाते हैं, जहां आमतौर पर उस दिन बच्चों के लिए निःशुल्क प्रवेश होता है। कुछ रेडियो और टेलीविजन प्रोग्राम होस्ट करने वाले बच्चों को अपने शो में बुलाते हैं।

यूरिनी नाल, दक्षिण कोरिया

दक्षिण कोरिया में बाल दिवस पर्व को राष्ट्रीय अवकाश होता है। इस दिन आयोजित होने वाले समारोहों में परेड, तमाशा, पार्टियां, पिकनिक और ताइक्वांडो प्रदर्शन शामिल हैं। इस सूची में पर्वतीय पद यात्राएं, नदी किनारे तंबू लगा कर रहने और मौज मस्ती करने जैसी गतिविधियां भी शामिल हैं। इस मौके पर बच्चे पारंपरिक कपड़े पहनते हैं और परिवार के साथ संग्रहालयों, पार्कों में मस्ती करने और फिल्म देखने जाते हैं। कई जगहों पर इस खास दिन के लिए बच्चों को निःशुल्क प्रवेश दिया

जाता है। इस दिन बच्चे दक्षिण कोरियाई शिल्प की वस्तुएं बनाते हैं, जैसे कि हाथ में पकड़ने वाला सोगो ड्रम, कमल का लालटेन या सैम ता, गुक पंखा। इस अवसर पर चावल से बने कोरियाई व्यंजन, पारंपरिक खाद्य पदार्थ जैसे मांडू (मांस और सब्जियों से बना पकौड़ा) कुजुलपैन (पैनकेक के अंदर लपेटे गए मांस और सब्जियों के स्ट्रिप्स), सोलोंगटैंग, चावल के केक जो आधे-चंद्रमा के आकार के होते हैं आदि का लुत्फ भी उठाया जाता है।

लिउयी गुओजी एर्तोंग जिए चीन

चीन में बाल दिवस सन 1949 से मनाया जा रहा

है। यहां इसे हर वर्ष 1 जून को मनाया जाता है। कुछ स्कूलों में, इसे बच्चों को समर्पित विशेष प्रदर्शनों के साथ मनाया जाता है। कई पर्यटक केंद्रों पर इस दिन बच्चों के लिए प्रवेश पर कुछ छूट दी जाती है या पूरी तरह से निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है। चीन में इस दिन अधिकतर परिवार अपने बच्चों के साथ समय बिताते हैं और पसंदीदा भोजन बनाते, खाते हैं।

ते रा ओ नगा तामारिकी न्यूजीलैंड

न्यूजीलैंड में बाल दिवस को 'ते रा ओ नगा तामारिकी' के नाम से जाना जाता है और यह हर साल मार्च के पहले रविवार को मनाया जाता है।

इस दिन वहां पूरे देश में मजेदार सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इनमें खेल, कार्निवल की सवारी, भोजन, पारंपरिक हाका नृत्य और बहुत कुछ शामिल होता है। k

अपने देश में मनाते हैं चाचा नेहरू का जन्मदिन

हमारे देश में 14 नवंबर को देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे बच्चों में चाचा नेहरू के नाम से लोकप्रिय थे। इससे पहले सन 1964 तक बाल दिवस 20 नवंबर को मनाया जाता था। दरअसल, सन 1954 में संयुक्त राष्ट्र ने 20 नवंबर को बाल दिवस के तौर पर मनाने का ऐलान किया था, जिसके चलते हर साल 20 नवंबर को ही बाल दिवस मनाया जाता था। लेकिन 1964 में जवाहर लाल नेहरू के निधन के बाद बाल दिवस भारत में 14 नवंबर को मनाया जाने लगा। इस दिन बच्चों के लिए सभी स्कूलों में मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन्हें तरह-तरह के खेल खिलाए जाते हैं और गिफ्ट भी दिए जाते हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में कई जगह राज्य सरकारें भी अपने स्तर पर बच्चों के लिए कार्यक्रम आयोजित करती हैं।

बिहार के सोनपुर में सदियों से लगने वाले पशु मेले की वैश्विक ख्याति और इसका आकर्षण बरकरार है। आज से शुरू हो रहा यह मेला 10 दिसंबर तक चलेगा। इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

बरकरार है सोनपुर मेले का आकर्षण

सांस्कृतिक उत्सव

धीरज बसाक

आज का दौर इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, डिजिटल पेमेंट और ई-कॉमर्स का है। यहां तक कि लोग अब पालतू पशुओं की खरीदारी के लिए भी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे समय में भी बिहार का सोनपुर पशु मेला सदियों से न सिर्फ आज भी लग रहा है बल्कि उसका पहले की तरह आकर्षण भी बरकरार है, जो इस मेले की आर्थिक और सांस्कृतिक महत्ता को खुद ही बखान कर रहा है।

लोकजीवन की जड़ों से जुड़ा मेला: सोनपुर का पशु मेला न केवल पशुओं की खरीद-फरोख्त की दृष्टि से एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है बल्कि यह धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिकी दृष्टि से भी विशिष्ट आयोजन है, जिसकी चमक सदियों से बरकरार है। इस मेले में पशुओं का व्यापार तो

होता ही है, अपितु यह भक्ति, संस्कृति और लोक परंपराओं का भी महाकुंभ है। यह मेला बिहार ही नहीं, पूरे भारत की ग्रामीण आत्मा और उसकी जीवनशैली का प्रतिनिधित्व करता है।

सदियों से लग रहा मेला: सोनपुर के पशु मेले का इतिहास 2,000 साल पुराना है। माना जाता है कि कृषि एवं अन्य कार्यों के लिए उपयोगी पशुओं की खरीद-बिक्री यहां मौर्य काल से होती आ रही है। गंगा और गंडक नदियों के संगम पर सोनपुर में लगने वाला यह मेला अपने पीछे कई पौराणिक आख्यानों की थाती समेटे हुए है, तो ग्रामीण जीवन की परंपरा का सबसे विश्वसनीय स्रोत भी है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार: सोनपुर का पशु मेला भारत की पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक बड़ा केंद्र है। इस मेले में गाय, भैंस, बैल, घोड़े, ऊंट और हाथी बिकते हैं। कभी यह एशिया का सबसे बड़ा हाथी बाजार हुआ करता था। हालांकि आज यह हाथी बाजार बहुत छोटा और विरासत के रूप में ही मौजूद है। यह मेला स्थानीय किसानों और पशु पालकों के लिए कमाई का एक बड़ा अवसर होता है। हाल के सालों में बिहार सरकार ने इसे 'एग्रीकल्चर एंड लाइवस्टॉक केयर' के रूप में विकसित किया है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: सोनपुर पशु मेला अब भौतिक रूप में तो लगता ही है, इसका एक बड़ा और व्यापक डिजिटल संस्करण भी मौजूद है। बिहार पर्यटन विभाग की वेबसाइट, सोशल मीडिया एकाउंट और ऑनलाइन बुकिंग सुविधाओं के जरिए देशभर के लोग इस मेले से न केवल डिजिटल दुनिया में रू-ब-रू होते हैं बल्कि वो डिजिटल तरीके से खरीद-फरोख्त भी करते हैं। एक तरह से यह डिजिटल और पारंपरिक लोकजीवन का संगम बन गया है।

लोक-संस्कृति की झलक: इस मेले में देश-विदेश के लाखों पर्यटक, किसान और व्यापारी सिर्फ घूमने, खरीदने-बेचने के लिए ही नहीं आते, बल्कि इस मेले की सांस्कृतिक आत्मा को जीने के लिए भी आते हैं। इस सदियों पुराने पशु मेले में आज भी हर तरफ लोक-नृत्यों, लोकगीतों, नुक्कड़ नाटकों, हस्तशिल्प और लोकभोजनों का खुशबू भरा आकर्षण मौजूद होता है। वास्तव में इस मेले में आकर हम एक ऐसे ग्रामीण भारत से रू-ब-रू होते हैं, जिसकी चमक और खनक आज भी पूरी दुनिया को अपनी तरफ आकर्षित करती है। विदेशी पर्यटकों के लिए तो यह पशु मेला भारत की ग्रामीण संस्कृति का 'ओपन एयर म्यूजियम' की तरह है। बिहार सरकार सोनपुर मेले को हेरिटेज टूरिस्ट प्लेस के रूप में भी प्रमोट करती है, जिससे स्थानीय लोगों की आय में इजाफा होता है और वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है।

सामाजिक-सांस्कृतिक जुड़ाव का अवसर: सोनपुर का मेला सिर्फ व्यापार मेला नहीं बल्कि विभिन्न समुदायों के मिलने-जुलने,

रिश्ते बनाने और अनुभव साझा करने का मंच भी है। इसलिए ग्रामीण समाज में यह मेला सामाजिक बंधन और लोकसंवाद की परंपरा को भी प्रोत्साहित करता है। आज जब पूरी दुनिया में वर्चुअल आयोजनों की भरमार है, ऐसे समय में सोनपुर का यह लोक मेला वास्तविक सामाजिक जुड़ाव का अनुभव देता है। यहां किसान, व्यापारी, शिल्पकार, संगीतकार और लोक-कलाकार सब मिलकर आम नागरिक जीवन की सतरंगी तस्वीर पेश करते हैं। यही वजह है कि आज के इस डिजिटल युग में भी सदियों से आयोजित हो रहे सोनपुर के पशु मेले का आकर्षण जरा भी कम नहीं हुआ है। k

गाइडेंस

कीर्तिशेखर

किसी एक उम्र तक ही सीरियस होकर सफल करियर नहीं बनाया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि हर एज की जरूरत के अनुसार करियर को सही दिशा दी जाए।

सक्सेसफुल करियर के लिए हर एज में सीरियस होना जरूरी

जीवन में कामयाब करियर हासिल करने के लिए सही समय क्या होता है, जब हमें इसके लिए गंभीर हो जाना चाहिए? इसके अलग-अलग जवाब हो सकते हैं। अगर हमें जीवन में अपने कामयाब करियर के लिए सजग रहना है तो जिंदगी के अलग-अलग पड़ावों में अलग-अलग तरह की सजगता बहुत जरूरी है ताकि उनके साझे नतीजे में हमारा शानदार-कामयाब करियर बने।

स्कूल टाइम (10 से 16 साल): यह वह उम्र होती है, जब कोई भी छात्र अपनी पढ़ाई, पढ़े जाने वाले विषय और उन विषयों में अपनी रुझान पहचानना शुरू करता है। इस उम्र में भविष्य के कामयाब करियर के लिए सजग हो जाना जरूरी है। क्योंकि उसी के मुताबिक आपको आगे अपने पढ़े जाने वाले विषयों की स्ट्रीम (आर्ट, कॉमर्स, साइंस) तय करना होता है और जिसमें बेहतर रुझान होता है, उसी दिशा में आगे करियर विकल्प पर फोकस करना होता है। इसलिए इस उम्र में जरूरी है- पढ़ने की आदत और अनुशासन विकसित करना। आप अपनी स्ट्रीम के मुताबिक अपनी रुचि को पहचानिए और उसे उस समय के हिसाब से विकसित करने की कोशिश करें। क्योंकि उम्र का यही वह पड़ाव होता है, जब हमारे जीवन के कामयाब करियर की नींव पड़ती है।

कॉलेज/स्नातक (16 से 23 साल): करियर के लिए हमारी जिंदगी में असली और सर्वाधिक सीरियस होने का यही समय होता है, क्योंकि इसी

समय हमें डिग्री मिलती है और डिग्री के साथ-साथ हम स्किल डेवलपमेंट, इंटर्नशिप या अपने ड्रीम करियर के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। इस समय करियर को लेकर सर्वाधिक गंभीरता की इसलिए भी जरूरत पड़ती है, क्योंकि इस उम्र में हममें सबसे ज्यादा ऊर्जा होती है। इसी उम्र में हमारे पास असफल होकर दोबारा से नए सिरे से करियर शुरू करने का हौसला रहता है।

युवावस्था (23 से 30 साल): यह करियर शुरू हो जाने के बाद उसे स्थिरता प्रदान करने का समय होता है। क्योंकि अब वास्तव में करियर शुरू हो चुका होता है और उसे मजबूत और स्थिर बनाना हमारे हाथ में होता है। इसलिए इस उम्र में हमें

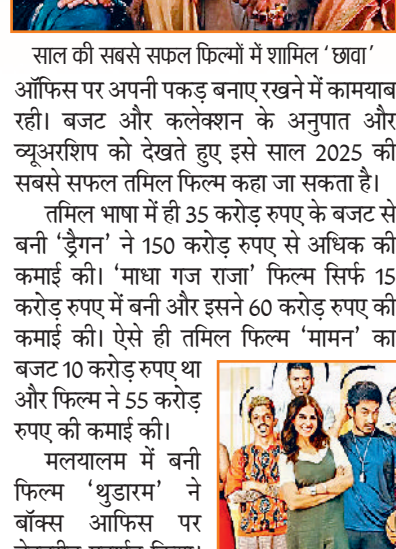

ज्यादा से ज्यादा अपने करियर के इस मोड़ पर फोकस करना चाहिए। उम्र के इस पड़ाव पर हमें सिर्फ करियर के लिए पढ़ाई पर ही ध्यान नहीं देना होता बल्कि नेटवर्किंग, अनुभव और सही अवसर पकड़ने की कोशिश पर होता है। क्योंकि अगर 23 से 30 के बीच हमारे करियर की दिशा अच्छी तरह से तय हो गई, तय होने के साथ-साथ इस दिशा में अगर हमने अपने आपको मजबूती से जमा लिया, तो आगे विकास और पदोन्नति आसान हो जाती है। यही वह उम्र है, जब हम एक करियर में रहते हुए इनकी मजबूती से तैयारी करते हैं। इसी उम्र में स्टार्टअप शुरू करना, अपने विषय विशेष पर रिसर्च करना या जॉब के साथ फ्रीलांसिंग के

अवसर पकड़ना होता है। इसलिए उम्र का यह पड़ाव भी करियर के लिहाज से इंपॉर्टेंट होता है।

स्थिरता-विकास (31 से 40 साल): 31वें साल से लेकर 40वें साल तक हम अपने करियर को स्थिरता प्रदान करते हुए उच्च विकास की ओर आगे बढ़ते हैं। इस दौरान कई बार हमें पीएचडी की पढ़ाई करनी होती है। जॉब में लीडरशिप पाने के लिए मैनेजमेंट कोर्स या इंटरनेशनल सर्टिफिकेशन की पढ़ाई करनी होती है। कुल मिलाकर इस उम्र में हम अपने करियर को मजबूती देकर विशेषज्ञता की ओर बढ़ते हैं और नेतृत्व हासिल करते हैं। इसलिए करियर के लिहाज से उम्र का यह पड़ाव हमारे लिए महत्वपूर्ण होता है कि इस समय तक हमारे क्षेत्र विशेष में हमारी प्रोफेशनल पहचान बनने लगती है और हममें अपने क्षेत्र में स्थिरता हासिल करना जरूरी हो जाता है।

अनुभव का पूंजीकरण (40 साल के बाद): उम्र के इस पड़ाव में हमें अपनी अब तक की मेहनत के कई सुफल मिलते है। लेकिन कई बार हमें इस उम्र में अपना टेक्नोलॉजी स्किल बदलने नए सिरे से अपनी पढ़ाई में कुछ और जोड़ना होता है। इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए। k

सिने ट्रेंड / डी. जे. नंदन

जरूरी नहीं कि जिस फिल्म का बजट ज्यादा होगा, उसका बॉक्स ऑफिस कलेक्शन भी जानदार होगा। कई बार लो बजट में बनी फिल्में भी कमाई के मामले में कमाल कर जाती हैं। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में बनी कुछ ऐसी फिल्मों पर एक नजर।

बजट रहा लो-किया हाई कलेक्शन

इस साल भारतीय सिनेमा में बड़े बजट की फिल्मों ने ही नहीं बल्कि छोटे बजट की अच्छी कहानियों पर बनी फिल्मों ने भी कमाल कर दिखाया। कम बजट में बनने वाली कई फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार कमाई तो की ही, फिल्म की कहानी और संगीत ने भी लोगों के दिलों को छुआ। मतलब साफ है, अब दर्शक ऐसी फिल्में देखना पसंद करते हैं, जिसकी कहानी उनके दिल को छू जाए और उन्हें एकबारगी सोचने पर मजबूर कर दे।

कम बजट में बड़ी सफलता: इस साल महज 45 करोड़ रुपए के बजट से बनी, फिल्म 'सैयारा' 500 करोड़ रुपए से अधिक का बिजनेस चुकी है। इस फिल्म की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि दर्शकों को बड़े-भव्य सेट्स और महंगे लोकेशन वाली फिल्में ही नहीं, अच्छी कहानी और अच्छे संगीत पर आधारित फिल्में भी खूब पसंद आती हैं। न्यू कमर्स अहान पांडे और अनीता पड्डा को इस फिल्म ने रातों-रात स्टार बना दिया। 'सैयारा' से पहले विकी कौशल की फिल्म 'छावा' ने वर्ल्डवाइड लगभग 808 करोड़ रुपए की कमाई की थी। महज 90 करोड़ रुपए के बजट में बनी 'छावा' साल 2025 की सबसे अधिक कमाई करने वाली हिंदी फिल्म बनी।

आमिर खान की 'सितारे जमीं पर' ने भी बेहतर प्रदर्शन किया है, जिसने लगभग 300 प्रतिशत का मुनाफा कमाया। राजकुमार राव अभिनीत 'भूलचूक माफ' महज 45 करोड़ रुपए के बजट से बनी, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म ने 90 करोड़ रुपए से भी ज्यादा की कमाई की थी।

'हाउसफुल 5' का उम्मीद से कम रहा कलेक्शन

बड़े बजट के बावजूद नहीं मिली सफलता: इस साल बड़े बजट की कई फिल्मों को लेकर कयास लगाए जा रहे थे कि वो बॉक्स ऑफिस पर बड़ी हिट साबित होंगी। लेकिन इन बिग बजट फिल्मों ने निराश ही किया। अक्षय कुमार की 'स्काई फोर्स' खास कमाई नहीं कर पाई। सनी देओल की 'जाट' उम्मीद से काफी कम चली। सलमान खान की फिल्म 'सिकंदर' भी कुछ खास कमाल नहीं कर पाई। शाहिद कपूर की फिल्म 'देवा', जो की मलयालम फिल्म की रीमेक है, नहीं चल पाई। कंगना रानोट की 'इमरजेंसी' से भी सफलता दूर ही रही। मल्टी स्टारर फिल्म 'हाउस फुल-5' अपना बजट निकालने में तो कामयाब रही, लेकिन फिल्म उम्मीद के मुताबिक मुनाफा नहीं कमा पाई।

'सैयारा' को मिली शानदार सफलता

अन्य भारतीय भाषाओं की सफल फिल्में: हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में बनी फिल्मों पर नजर डालें तो क्षेत्रीय भाषाओं में बनी कई लो बजट फिल्मों ने कमाल की सफलता पाई। तमिल फिल्मों की बात करें तो सिर्फ 7 करोड़ रुपए के मामूली बजट में बनी तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने दुनियाभर में 100 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की है। यह फिल्म पांच सप्ताह तक लगातार बॉक्स

साल की सबसे सफल फिल्मों में शामिल 'छावा'

ऑफिस पर अपनी पकड़ बनाए रखने में कामयाब रही। बजट और कलेक्शन के अनुपात और व्यूअरशिप को देखते हुए इसे साल 2025 की सबसे सफल तमिल फिल्म कहा जा सकता है।

तमिल भाषा में ही 35 करोड़ रुपए के बजट से बनी 'ड्रैगन' ने 150 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की। 'माधा गज राजा' फिल्म सिर्फ 15 करोड़ रुपए में बनी और इसने 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही तमिल फिल्म 'मामन' का बजट 10 करोड़ रुपए था और फिल्म ने 55 करोड़ रुपए की कमाई की।

मलयालम में बनी फिल्म 'थुडारम' ने बॉक्स आफिस पर बेहतरीन प्रदर्शन किया। लगभग 50 करोड़ रुपए के बजट वाली इस फिल्म ने 235 करोड़ रुपए के आस-पास कमाई की। मलयालम भाषा की ही फिल्म 'रेखा चित्रम' सिर्फ 10 करोड़ रुपए के बजट से बनी थी। फिल्म ने उम्मीद से ज्यादा लगभग 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही 'अलप्पाबुझा जिमखाना' 12 करोड़ रुपए के

तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने किया कमाल

बजट से बनी और लगभग 70 करोड़ रुपए की कमाई की।

तेलुगू भाषा की फिल्म 'संक्रांतिकी वस्थुनम' 50 करोड़ रुपए के बजट से बनी और फिल्म ने लगभग 260 करोड़ रुपए की कमाई की।

दर्शकों को प्रभावित करती है कहानी: छोटे बजट की इन भारतीय फिल्मों के बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन यह संकेत करता है कि फिल्म का बजट और स्टारकास्ट भले ही मायने रखते हैं, लेकिन फिल्म की कहानी और उसकी प्रस्तुति भी दर्शकों को खींचने और उन्हें बांधे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बड़े बजट की फिल्मों का कम चलना और लो बजट फिल्मों का शानदार प्रदर्शन निर्माता-निर्देशकों के लिए भी सबक है कि वे स्टार पावर के अलावा कहानियों और उसके प्रस्तुतिकरण पर भी ध्यान दें। भले ही कम बजट में फिल्में बनाएं, लेकिन अच्छी फिल्में बनाएं। k

'सितारे जमीन पर' ने भी की बढ़िया कमाई